वर्ष: 16 | अंक : 7 | जुलाई 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज
पावन जन्मदिवस **27** जुलाई पर हार्दिक बधाई!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-7
जुलाई, 2025
आषाढ़-श्रावण, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

गुरु हैं प्रकाश की तरह

आध्यात्मिक जीवन यात्रा में गुरु एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह है जो आगे का रास्ता रोशन करता है। वह हमारे जीवन को आकार देने, मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करने और हमें नियंत्रण में रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुरु पीछे है, एक नाविक के रूप में सेवा कर रहा है, जबकि शिष्य आगे ध्यान केंद्रित करता है। गुरु हमारे विकास और सफलता में योगदान करता है। गुरु हमसे पहले इस मार्ग पर चला है, और इस मार्ग पर चलते हुए उसने ज्ञान और अनुभव अर्जित किया है। उसने चुनौतियों का सामना किया है, गलतियाँ की हैं और मूल्यवान सबक सीखे हैं। अपने अनुभवों को साझा करके, वह हमें मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे हम उचित निर्णय लेने और अनावश्यक नुकसान से बचने में सक्षम होते हैं।

एक सच्चा गुरु हमें सिर्फ़ हमारे सवालों के जवाब नहीं देता! बल्कि, वह उन जवाबों तक पहुँचने की यात्रा पर ज़ोर देता है। वह समाधान खोजने के पीछे की प्रक्रिया को समझाकर, हमें ज़रूरी साधना और ज़रूरी त्यागों के लिए विवेक और ज्ञान प्रदान करता है। चुनौतीपूर्ण समय के दौरान किसी ऐसे व्यक्ति का होना हमारे उद्देश्य को प्राप्त करने में एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति हो सकती है। गुरु न केवल एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, बल्कि एक प्रशिक्षक के रूप में भी कार्य करता है, जो हमें अपने विचारों और कार्यों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने में मदद करता है। वह रचनात्मक आलोचना प्रदान करता है और हमारी कमियों को उजागर करता है, हमें अपने कार्यों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने के लिए मार्गदर्शन करता है। वह स्वयं अपना उदाहरण प्रस्तुत कर, हमें आगे बढ़ने और सुधार करने के लिए प्रेरित करता है। गुरु केवल उपदेशक नहीं बल्कि जीवन साथी होता है, जो हमें खुद का सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। वह ज्ञान साझा करता है, उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करता है, रचनात्मक आलोचना करता है, और अटूट अवलंबन प्रदान करता है। व्यक्तिगत विकास और सफलता के लिए गुरु के मार्गदर्शन को अपनाना आवश्यक है। जैसे-जैसे हम साधना के विभिन्न चरणों से गुजरते हैं, हमें ज्ञान और आंतरिक शांति के साधक बने रहना चाहिए, हमें किसी से भी सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमारी संस्कृति में, गुरु का सम्मान और आदर किया जाता है और हम उन्हें भगवान के रूप में पूजते हैं। अंत में, उन गुरु के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बारम्बार नमन करते हैं, जिन्होंने हमारे जीवन को बदल दिया है। उनके प्रभाव, ज्ञान और उपदेशों ने हमें वह बनाया है जो हम आज हैं, और उनके दिव्य प्रभाव को स्वीकार करके, हम आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ते और विकसित होते जा रहे हैं।

जीवेत् शरदः शतम् ।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्म-दिवस 27 जुलाई, 2025 पर हार्दिक बधाई एवं बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

यथा नाम तथा गुण के साकार प्रतिमान हैं
परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

देवभूमि उत्तराखण्ड सनातन काल से ही अध्यात्म, ज्ञान-विज्ञान, योग, शिक्षा, साहित्य, संगीत और कला का केन्द्र रही है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता ने भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इस पावन धरती में विश्व प्रसिद्ध तीर्थ- हरिद्वार, ऋषिकेश, बदरीनाथ, केदारनाथ, हेमकुण्ड साहिब, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, जागेश्वर, बागेश्वर तथा पूर्णागिरि आदि मौजूद हैं; जहाँ प्रतिवर्ष लाखों लोग दर्शन एवं पूजन के लिए आते हैं। इसके साथ ही उत्तराखण्ड में पाँचों पांडवों, महाराज भरत आदि अनेक पौराणिक नायकों से लेकर कवि कुलगुरु कालिदास, वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली, वीरांगना तीलू रौतेली, श्री माधव सिंह भंडारी, श्री चन्द्रकुंवर बर्त्वाल, योगीराज श्री हंस जी महाराज, श्री स्वामी राम, माताश्री राजेश्वरी देवी तथा श्रीदेव सुमन जैसी कई महान विभूतियों को जन्म दिया जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से देश एवं समाज की सेवा कर पूरी दुनिया में देश और प्रदेश का नाम रोशन किया।

महान विभूतियों की इसी श्रृंखला में अध्यात्म ज्ञान प्रचार तथा जनसेवा का भाव अपने दिल में संजोये श्री भोले जी महाराज का जन्म 27 जुलाई, 1953 **"गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन"** को उत्तराखण्ड के पवित्र तीर्थस्थल कनखल, हरिद्वार में हुआ। इनके पिता योगीराज श्री हंस जी महाराज तथा माता श्री राजेश्वरी देवी मूल रूप से पोखड़ा ब्लॉक, जिला पौड़ी गढ़वाल के निवासी थे जो शुरू ही से ही परम तपस्वी, समाजसेवी और आध्यात्मिक ज्ञान के दाता थे। उन्होंन कठोर परिश्रम करके भारत के दुर्गम पहाड़ी इलाकों एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों के साथ-साथ कई अन्य देशों में भी अध्यात्म ज्ञान का प्रचार कर लोगों के अन्दर प्रेम, शांति और सद्भाव की ज्योति जलाई। आज श्री भोले जी महाराज अपनी धर्मपत्नी श्री मंगला जी के साथ मिलकर अपने माता-पिता एवं आध्यात्मिक गुरु द्वारा शुरू किये गये अध्यात्म ज्ञान प्रचार एवं जनसेवा के कार्यों को बड़ी सक्रियता और सहृदयता से आगे बढ़ा रहे हैं।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज यथा नाम तथा गुण के साकार मूर्तिमान हैं। वे देखने में ही भोले-भाले नहीं हैं, अपितु उनका यह स्वाभाविक गुण है। वे भी भगवान भोले शंकर की तरह परमदयालु, कृपालु, करुणा के सागर और औढरदानी हैं। श्री भोले जी महाराज का सहज, सरल और बालसुलभ स्वभाव सहज ही सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। जब भी वे किसी से मिलते हैं, तो उनके भोले-भाले सरल स्वभाव को देखकर वह सहसा कह उठता है, ये तो वास्तव में ही भोले नाथ हैं। ऐसे देव पुरुष के दर्शन और सानिध्य प्राप्त कर हम भी धन्य हो गये। श्री भोले जी महाराज को सभी चाहते

हैं, सभी प्रेम करते हैं और सभी उन्हें अपना ही मानते हैं, क्योंकि उनके लिए कोई अपना और पराया नहीं है। वे बाल, वृद्ध और युवा, सभी के साथ एक जैसे ही हैं। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का मानना है कि इस धरती पर मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसलिए पूरी दुनिया को सुंदर, सुव्यवस्थित, समुन्नत तथा सुसंस्कृत बनाने का कार्य ईश्वर ने मानव को सौंपा है और यह कार्य सम्पन्न होगा अध्यात्म ज्ञान के प्रचार व प्रसार से। ज्ञान के बिना मानव का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है; क्योंकि विभिन्न प्रकार की तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति की तब तक कोई सार्थकता नहीं है, जब तक मनुष्य नैतिक तथा चारित्रिक रूप से समृद्ध न हो। इस समृद्धि का सीधा संबंध मनुष्य की आंतरिक चेतना से है जो आध्यात्मिक ज्ञान से ही अंकुरित होती है और फलती-फूलती है।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा एवं लोक कल्याण के लिए समर्पित है। वे 'द हंस फाउण्डेशन', 'श्री हंसलोक जनकल्याण समिति' तथा 'हंस कल्चरल सेंटर' जैसी कई धर्मार्थ, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं के प्रेरणास्रोत हैं। उनके दिशा-निर्देशन में ये संस्थाएं देश के विभिन्न भागों में लोगों के आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ गरीब एवं असहाय लोगों को बेहतर चिकित्सा, स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने, दिव्यांग, जरूरतमंदों तथा आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की मदद कर उन्हें प्रोत्साहित एवं

सम्मानित करने का कार्य कर रही हैं।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के मार्गदर्शन में श्री हंस करुणा स्वास्थ्य परियोजना के तहत सतपुली जिला पौड़ी गढ़वाल में गरीब तथा असहाय लोगों के इलाज के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त द हंस फाउण्डेशन जनरल हॉस्पिटल का संचालन किया जा रहा है। इस क्षेत्र में अब तक कोई बड़ा चिकित्सा सुविधाओं से युक्त अस्पताल नहीं होने के कारण गंभीर रूप से बीमार लोगों को इलाज के लिए दिल्ली, देहरादून तथा चण्डीगढ़ ले जाना पड़ता था। स्थानीय लोगों के अनुसार यह अस्पताल अभावग्रस्त पहाड़ की जनता विशेषकर सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पिता तथा आध्यात्मिक गुरु परमपूज्य श्री हंस जी महाराज का जन्म स्थान गाड़ की सेड़िया-धैड़गांव विकास खण्ड पोखड़ा एवं परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी की जन्मभूमि मेलगांव इस अस्पताल के बहुत नजदीक पड़ते हैं। उनके समय में आज की तरह न तो सड़कें थीं और न ही यातायात के साधन। परमपूज्य श्री हंस जी महाराज सतपुली से पोखड़ा तक पैदल ही आते-जाते थे। उन्होंने पहाड़ के लोगों के कष्टों तथा तकलीफों को निकटता से अनुभव किया था। वे चाहते थे कि पहाड़ी क्षेत्र में भी चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाओं का विस्तार हो। उन्हीं की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला ने इस अस्पताल का निर्माण कराया है। द हंस फाउण्डेशन जनरल हॉस्पिटल की ओपीडी में जहाँ हजारों रोगी प्रतिदिन चिकित्सकीय परामर्श और दवाइयां प्राप्त कर लाभ उठा रहे हैं, वहीं सैकड़ों गंभीर बीमारियों से ग्रसित रोगी अस्पताल में भर्ती होकर कुशल चिकित्सकों की देखरेख में बीमारियों से छुटकारा प्राप्त कर रहे हैं। बहादराबाद जिला हरिद्वार में हंस आई केयर के नाम से एक अत्याधुनिक अस्पताल का संचालन किया जा रहा है जिसमें प्रतिदिन सैकड़ों लोग आँखों की जाँच, ऑपरेशन और इलाज कराकर लाभ प्राप्त कर रहे हैं। माता राजेश्वरी शिक्षा परियोजना के तहत कैम्पटी, मसूरी में राजेश्वरी करुणा स्कूल के साथ-साथ अनेक विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है।

इसके अलावा परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से अनेक प्रदेश सरकारों तथा गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर द हंस फाउण्डेशन एवं हंस कल्चरल सेंटर अनेक जनकल्याणकारी परियोजनाओं का संचालन कर रहा है जिसमें सीमांत प्रांत उत्तराखण्ड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, आसाम, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पश्चिम बंगाल मुख्य रूप से शामिल हैं। आसाम में आदिवासियों के सामूहिक विवाह हों अथवा नागालैण्ड में शिक्षा का विस्तार तथा पश्चिम बंगाल के आदिवासी सुंदरवन क्षेत्र में चल-अचल-नौकायान द्वारा चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराया जा रहा है। उत्तराखण्ड सरकार के साथ चारधाम यात्रा मार्गों पर सचल चिकित्सा सुविधाओं, बद्रीनाथ धाम, केदारनाथ धाम में आईसीयू रूम का संचालन, देहरादून आदि स्थानों पर डायलिसिस सेंटर का संचालन, उत्तराखण्ड पुलिस को सैकड़ों वाहन उपलब्ध कराना या स्वामी विवेकानन्द हेल्थ मिशन अस्पतालों के संचालन में आर्थिक सहयोग देकर सक्रिय भागीदारी के साथ-साथ सुदूर पर्वतीय गांवों में नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों का संचालन, जगह-जगह भण्डारे, प्याऊ, अन्नक्षेत्रों का संचालन तथा जीर्ण-शीर्ण देवस्थानों-मंदिरों का जीर्णोद्धार, विद्यालयों तक विद्यार्थियों के आने-जाने के लिए अनेक विद्यालयों को बसें उपलब्ध कराना आदि कार्य लगातार विशाल रूप धारण करते जा रहे हैं। आज उत्तराखण्ड के हरएक जन के मुख पर श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी का नाम है।

लद्दाख में सीमांत गांवों में जरूरी सुविधाओं के विस्तार के साथ शिक्षा और चिकित्सा की सुविधाओं का भी विस्तार किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश मनाली में एक बड़ा अस्पताल निर्माणाधीन है, वहीं प्रदेश सरकार के साथ अनेक कल्याणकारी योजनाओं पर कार्य चलने के साथ पुलिस विभाग को वाहन उपलब्ध कराये गये हैं। श्रीकृष्ण जन्मभूमि में सुपर स्पेश्यलिटी अस्पताल निर्माण गति पर है, साथ ही उत्तर प्रदेश में शिवांश खेती, शिवांश खाद, वृक्षारोपण, बांदा और नैनी प्रयागराज केन्द्रीय कारागार में कैदियों को जैविक कृषि के प्रशिक्षण के साथ-साथ अनेक कल्याणकारी परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। इन सबके साथ गौ सेवा का भी कल्याणकारी कार्य चल रहा है जिसके तहत दिल्ली के भाटी कलां में हंस गौशाला, हंस काउ रेस्क्यू एण्ड ट्रीटमेंट सेंटर, नि:शुल्क पशु चिकित्सा शिविरों का लगातार संचालन किया जा रहा है। कुशल पशु चिकित्सकों की देखरेख में रेस्क्यू सेंटर में अब अनेक बीमार, दुर्घटनाग्रस्त घायल एवं लावारिश गायों का इलाज कर स्वस्थ किया जा चुका है, अनेक गायों का इलाज चल रहा है। देहरादून में भी एक विशाल गौशाला का संचालन किया जा रहा है। इसके अलावा अनेक गौशालाओं को हर माह चारा, चूरी, चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराने के साथ भूसाघर और गौशाला शैड का निर्माण किया जा चुका है। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी की प्रेरणा से विधवा, दिव्यांग, परित्यक्ता, वृद्ध एवं बेसहारा महिलाओं के जीवन को सरल बनाने के लिए उन्हें हरमाह पेंशन दी जा रही है। इसके अलावा होनहार गरीब विद्यार्थियों को सामान्य और उच्च शिक्षा के लिए लगातार आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे अब तक हजारों विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। देश के पर्व-त्योहारों, मेला एवं पर्वों में भी फाउण्डेशन चिकित्सा सुविधाओं के अलावा रैन बसेरा आदि सुविधाएं उपलब्ध कराता आ रहा है, जो निरंतर जारी है। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के मार्गदर्शन से इस प्रकार की अनेकानेक सेवा कार्य निरन्तर सक्रियता के साथ संचालित किए जा रहे हैं और लगातार उनका विस्तार भी किया जा रहा है।

परमपूजनीय श्री भोले जी महाराज को उनके पावन जन्मोत्सव पर हम सब उन्हें हार्दिक बधाई प्रेषित करते हैं तथा उनके यशस्वी, तेजस्वी, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। ■

कबिरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! जिस नाम को जानने के लिए मैं कहता हूं, वही आदि नाम है, भगवान का वही सच्चा नाम है। यदि उस नाम को तुम जान लोगे और सुमिरण करोगे, तो तुम्हें मोक्ष मिल जाएगा। वह कौन-सा नाम है? श्रीमद्भगवत गीता तुम पढ़ते हो, लेकिन भगवान का नाम पढ़ने-लिखने में नहीं आता, वह भाषा का विषय नहीं है। अगर वह नाम पढ़ने-लिखने का विषय होता, तो पढ़े-लिखे लोग तो मुक्त हो जाते और अनपढ़ कभी भी मुक्त नहीं हो पाते। भिलनी भक्त कभी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर पाती, क्योंकि वह अनपढ़ थी। और भी कई ऐसे भक्त हुए हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।
बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी।।

मैंने एक विद्वान महाशय से पूछा कि भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! मैं तुझे एक ऐसी बात बताऊँगा जो बहुत ही गुप्त है और जिसे जान लेने मात्र से तू अशुभ से बच जायेगा। तो वह क्या चीज है, जो भगवान ने अर्जुन को बतलायी? इस पर वे महाशय बोले कि वह ब्रह्मज्ञान की बात है। जब तुम्हें ब्रह्मज्ञान हो जायेगा, तो मुक्त हो जाओगे। तो मैंने उनसे कहा कि इसमें आगे लिखा है-

राजविद्या राजगुह्यं,
पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं,
सुसुखं कर्त्तुमव्ययम्।।

वह राजविद्या है, सब विद्याओं का राजा है, राजगुह्यं, सब गोपनीयों (गुप्त) चीजों का भी राजा है, उससे ज्यादा गुप्त और कोई चीज नहीं है। वह सबसे पवित्र है, उत्तम है, अविनाशी है, उसका

कभी नाश नहीं होता। तो कहने लगे कि यह ब्रह्मज्ञान ही है, यही ब्रह्मज्ञान सब विद्याओं का राजा है और सब गोपनीयों का भी राजा है। यही सबसे पवित्र है और सबसे उत्तम है। मैंने कहा ठीक है, लेकिन आगे कहा है कि साधन करने में अत्यन्त सुगम और प्रत्यक्ष फल देने वाला है। ब्रह्मज्ञान तो साध्य है, साधन नहीं, जब ब्रह्मज्ञान हो ही गया, तो फिर काहे का साधन? लेकिन भगवान साधन बताते हैं, तो वह कौन-सा साधन है, बताओ? तब कहने लगे कि यह भक्ति है। तो मैंने उनसे कहा कि अभी तो ब्रह्मज्ञान कह रहे थे, अब भक्ति क्यों कहने लगे? फिर मैंने उनको बतलाया कि भगवान कहते हैं कि वेद पढ़ने से, तप करने से, दान-पुण्य करने से और यज्ञादि करने से मेरा ज्ञान नहीं होता। मेरा ज्ञान अनन्य भक्ति से होता है, जैसा कि गीता में बताया है, तो कहने लगे कि यह तो भक्ति की महिमा भगवान ने गाई है। मैंने कहा- क्यों गायी है? इसलिये न कि दुनियां भक्ति में लगेगी, तो मैं मिल जाऊँगा। इसीलिये तो भगवान कहते हैं कि मेरा तत्वज्ञान तो भक्ति से प्राप्त होता है और फिर गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने बताया है कि इस तत्वज्ञान रूपी धर्म में जिसकी श्रद्धा नहीं है, वह मेरे को कभी नहीं मिल सकता। वह सदा चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता रहेगा। आज अगर मान लो कोई भीख मांगने वाला है, वह सपने में चक्रवर्ती राजा बन जाए, तो आंख खुलने पर फिर वही भिखारी ही रहेगा! कोई चक्रवर्ती राजा सपने में भिखारी हो गया, तो आंख खुलने पर चक्रवर्ती राजा ही तो रहेगा?

इसी तरह से आजकल के ये जो ब्रह्मज्ञानी हैं, वे भगवान को भूले हुए हैं, उनके लिए यह स्वप्न है। जब उनकी मौत होगी, तो फिर पहले की तरह वैसे ही चौरासी में चक्कर लगाते रहेंगे। कभी गधा बनेंगे, कभी कुत्ता बनेंगे और कभी घोड़ा बनेंगे, क्योंकि फिर इन्हें कोई भी चौरासी से नहीं छुड़ा सकता, केवल एक प्रभु की भक्ति है, जो इन्हें चौरासी से छुड़ा सकती है। तो ऐसी है प्रभु की भक्ति, जिसकी महिमा स्वयं भगवान ने गायी। भक्ति जो है, वह स्वतन्त्र है। वेद

पढ़ने की, यज्ञ करने की या दान-पुण्य आदि करने की, कोई विद्या पढ़ने की जरूरत नहीं है। भक्ति हर एक आदमी कर सकता है, प्रभु के नाम का सुमिरण हर कोई सकता है। कहा है-

लेने को हरि नाम है,
देने को अन्नदान।
तरने को आधीनता,
डूबन को अभिमान।

मनुष्य को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह उसको डुबा देता है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभिमान को छोड़ो। तुमको अभिमान है कि हम तो बहुत बड़े मिनिस्टर हैं, या प्रेसीडेंट हैं या बड़े भारी सेठ हैं, हमारी इतनी मिलें चलती हैं, हम इतने बड़े राजा हैं, यह सब झूठा मान-गुमान है। इलेक्शन में यदि हार जायें, तो मिनिस्ट्री रखी रह जाती है। जीते-जी मिनिस्टर बनने से रह जाते हैं और मरने के बाद तो भाई, कोई भी मिनिस्टर नहीं रहेगा। तो जीते-जी उलझनों में उलझे हुये हो। ज्ञान के बारे में किसी से पूछने में शर्म आती है। पर मैं पूछता हूँ, जब किसी अनजान जगह में तुम पहुँच जाते हो, जहां चार-पांच रास्ते होते हैं, वहां अगर कोई झाड़ू लगा रहा होता है, तो उससे भी पूछ लेते हो कि तुम्हें किधर जाना है? लेकिन भगवान की भक्ति का रास्ता तुम नहीं पूछोगे। भक्ति के लिए तुम्हें फुर्सत नहीं है। जो सत्य था, वह फुर्र हो गया, उड़ गया। अब तो झूठ ही झूठ फैला हुआ है। रिश्वतखोरी का जमाना है। बिना वजह किसी पर मुकद्मा कर देने का जमाना है। बड़े-बड़े होटलों में, सिनेमाघरों में लाइनें लगी हैं, क्योंकि सब कुछ यहीं दिखाई देता है। इसके अलावा दुनिया में कुछ नजर ही नहीं आता। माया की चमक-दमक में मनुष्य अपने लक्ष्य को भूलता जा रहा है। सुदामा जिस महल को देखकर रोये थे कि यह माया है, यह मैंने कब मांगी थी भगवान से। यह तो बड़ी ठगनी है, यह सबको खा जाती है, इसको कोई नहीं भोग पाता। तब सुदामा की पत्नी ने कहा कि मेरी इच्छा थी, मैं गरीबी से बहुत दुःखी थी। इसलिए भगवान ने अन्दर की आवाज सुनकर ये धन-दौलत और महल-खजाने मुझे दिये हैं। इसी माया-मोह के जाल में सारी दुनियां फँसी पड़ी है। जो चीजें नाश हो जायेंगी, कुटुम्ब कबीला छूट जायगा, केवल एक प्रभु का नाम ही सच्चा साथी है। मगर उसे तुम पूछते नहीं। बाकी, यह सब स्वप्नवत् है भाई। एक सज्जन मेरे पास आये, कहने लगे-थोड़े दिन हुए मेरी स्त्री मर गई, मुझे उसकी याद बहुत आती है। मैं तुम्हें एक सच्ची बात बताता हूं। रात मुझे स्वप्न हुआ और सवेरे के टाइम हुआ। बहुत अच्छा स्वप्न था कि कहीं सत्संग हो रहा है, लोग मेरे से कह रहे हैं कि वहां चलो! मैंने उनसे कहा कि मेरे पास टाइम नहीं है, स्वप्न तो बड़ा अच्छा था, लेकिन था तो स्वप्न ही न? तो ऐसे ही यह सब स्वप्न है भाई! मैंने उनको समझाया। एक और सज्जन रात को मेरे पास आये। कहने लगे कि मेरा मन नहीं रुकता। तो मैंने कहा कि भगवान का नाम तुम्हारे पास है, उसका सुमिरण और अभ्यास तुमको करना है।

> भगवान श्रीकृष्ण ने बताया है कि इस तत्वज्ञान रूपी धर्म में जिसकी श्रद्धा नहीं है, वह मेरे को कभी नहीं मिल सकता। वह सदा चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता रहेगा।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखलाया और कहा कि मैंने ही सब कुछ बनाया है, मैं ही सबमें हूँ और सब मेरे में है। भगवान श्रीकृष्ण भी कहते हैं- हे अर्जुन, अभ्यास करो, तो अगर हम तुमको कहते हैं कि अभ्यास करो, तो हम कौन-सी गलत बात कहते हैं। अर्जुन ने भगवान से कहा कि भगवान्, जैसे आकाश के टुकड़े करना और हवा की गठरी बांधना कठिन है, ऐसे ही मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है। तब भगवान ने कहा कि बेशक, जो तुम कहते हो ठीक है, मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है, पर अभ्यास और वैराग्य से मन काबू में होता है। तो चलते-फिरते, सोते-जागते और उठते-बैठते नाम सुमिरण का अभ्यास करो। संतों ने कहा है-

दिल में झाड़ू लगाओ। अगर तुम्हारे अंदर कहीं मैल जमा हुआ है, तो उस मैल को निकालो। एक तो पहले से ही कचड़ा तुम्हारे अंदर जमा है, उस पर और भी कचड़ा डालते रहोगे, तो कचड़ाखाना यानि कूड़ाघर बन जायेगा। वह सड़ेगा, उसमें से बदबू आने लगेगी। जहां सफाई होती रहती है, वहाँ बदबू नहीं आती। तो प्रेमी सज्जनों! मेरे कहने का मतलब यह है कि उस सच्चे नाम को जानो और प्रभु की सच्ची भक्ति में लगो। एक आदमी कहने लगा कि हमारे ऊपर दया करो। मैंने कहा कि मेरे हृदय में और सन्तों के हृदय में तो सदैव दया ही रहती है, दया के सागर होते हैं संत। उनको किसी से क्या द्वेष, क्या मतलब? कोई उपदेश लेवे, नाम लेवे तो भी अच्छा है, न लेवे तो भी अच्छा है।

कबिरा खड़ा बाजार में,
सबकी मांगे खैर।

ना काहू से दोस्ती,
न काहू से बैर।।

तो हम तो सब की खैर मनाते हैं। जो ज्ञान नहीं लेता है, वह कुछ हमारे लिए थोड़े ही नहीं लेता, अपने लिए नहीं लेता है, मुझसे लोग कहते है कि ऐसे ही ज्ञान दे देते हो और महात्माओं से भी दिला देते हो, लोग उसकी कदर नहीं करते है। मैंने कहा कि नहीं करेगा कदर, तो लाभ उसको नहीं होगा। मान लो एक आदमी को हीरा मिला, उसने पत्थर समझ लिया, तो उसको क्या कीमत मिलेगी? एक कुम्हार था। मिट्टी गधे पर लाद कर ला रहा था। उसे एक लाल मिल गया। उसने ऐसी ही कोई मामूली चीज समझ कर गधे के गले में लटका दिया। एक जौहरी आया, उसने देखा इतना बेशकीमती लाल गधे के गले में लटक रहा है। उसने कुम्हार से कहा कि इसे बेच दो। शाम का वक्त था, घर जाने का। उसने सोचा- चलो, दो चार आने मिल जायेंगे। पूछा, क्या दोगे? कहा, दस लाख रुपये। ऐसे ही मनुष्य शरीर है।

देखो, झूठी बातों में लगने से भला नहीं होगा। इसलिए सच्चे गुरु की शरण में जाकर अन्दर के सच्चे प्रकाश को और अमृत नाम को प्राप्त करो और तन-मन-धन से सेवा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न करके अपने परलोक को सुधारो। इस संसार में सिकन्दर जैसे भी खाली हाथ चले गये, जिसने अनेक बादशाहों का खजाना जमा कर लिया था। फिर तुम ही क्या ले जा सकोगे, जो बिना भक्ति और सेवा के हीरे जैसा जन्म गँवा रहे हो। परमात्मा का भजन करके इसको सार्थक करो। यही कबीरदास जी का कहना है।

भजन बिना बावरे,
तूने हीरा सा जन्म गँवाया।।

देखो! इस फव्वारे की गेंद जिसको पानी की धार सहारा देकर ऊपर ले जाती है, जिससे अधर में टिकी हुई है। इसी प्रकार यदि तुमने भगवान में सुरति लगाई तो गेंद की तरह आकाश में पहुँच जावोगे। देखो! यह गेंद हवा लगने से गिरती है; इसी प्रकार सांसारिक विषय रूपी हवा जब तुमको अपनी ओर खींचती है और भजन की ओर नहीं लगने देती, तो इसी प्रकार गेंद की तरह तुम भी गिर जाते हो। ठीक यही दशा आज संसार की है, इतना प्रयत्न करने पर भी ऐसी कल्याणकारी सच्ची बात में नहीं लगते। हमने बड़े प्रेम से पर्चे छपवाये थे और अमेरिका, रूस, इंग्लैन्ड, जापान, चीन, बर्मा आदि सब देशों में भेजे थे। हम समझते थे कि लोगों को परमात्मा के जानने की इच्छा होगी, परन्तु आज दुनिया को फुरसत नहीं। यूँ तो कहावत है कि किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता। बहुत से लोग दूर-दूर से आये हुए हैं, कई देशों से कितनों के उत्तर भी आये हैं कि फुरसत नहीं। जब जीते-जी फुरसत नहीं और मरने के पश्चात् कहते हैं कि राम नाम सत है।

> भक्ति जो है, वह स्वतन्त्र है। वेद पढ़ने की, यज्ञ करने की या दान-पुण्य आदि करने की, कोई विद्या पढ़ने की जरूरत नहीं है। भक्ति हर एक आदमी कर सकता है, प्रभु के नाम का सुमिरण हर कोई सकता है।

छूटा स्वांस बिखर गई देही,
ज्यों माला मनका।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि इस **'दम दा मैंनूँ की भरोसा, आया न आया'** यह स्वांस का खेल है। आया दम तो आदम है, नहीं जादम है।

मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि यह मनुष्य तन ईश्वर का प्रसाद है, परन्तु सद्गुरु की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। यह तन जो भगवान की कृपा से मिला है, यह नौका है। जैसे बिना पतवार और मल्लाह के नौका पार नहीं होती, उसी प्रकार भगवान के नाम और सद्गुरु के बिना पार नहीं हो सकते।

मत कोई भरम भूलो संसारी।
गुरु बिन कोई न उतरसी पारी।।

पढ़ने-लिखने, रूप-रंग, जायदाद या उपाधियों के भ्रम में कोई न भूले! चाहे तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की तलाश भी हो जाये, तो भी बिना गुरु के तर नहीं सकते। नारद वैकुण्ठ में जाते थे, निगुरा होने के कारण वे जहाँ बैठते थे, वह जगह अपवित्र हो जाती थी; उनको भी गुरु करना पड़ा। शुकदेव मुनि जी इतने बड़े ज्ञानी थे, उनको भी राजा जनक को गुरु बनाना पड़ा। यह संसार स्वप्न जैसी माया है, जैसे सोये में स्वप्न सत्य जान पड़ता है और जागने पर मिथ्या है। उसी प्रकार यह संसार शरीर छूटने पर स्वप्नवत् और मिथ्या है। इसलिए मनुष्य जीवन का ध्येय परम प्रकाश को जानना है, जो बिना संत-महात्मा के नहीं जाना जा सकता। गुरु किसे कहते हैं? गुरु उसे कहते हैं जो उस परम प्रकाश को दिखावे जिसके लिए रामायण में लिखा है कि-

परम प्रकाश रूप दिन राती।
नहिं चाहिअ कछु दिया घृत बाती।।

केवल कंठी माला देने वाले गुरु नहीं। गुरु वह है जो रचना से परे का ज्ञान दे, जिसको अमृतकथा, सतनाम कहा है। जिसकी महिमा भगवान राम भी नहीं गा सके, जिसके प्रभाव से गणेश जी सबसे पहले पूजे गये। उसी सतनाम को सद्गुरु महाराज से जानकर जपने से सच्चा भला होगा।

कह नानक नाम संभाल, सो दिन नेड़े आयो

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! मनुष्य का जीवन भर जिस व्यक्ति अथवा वस्तु से प्रेम एवं लगाव होता है, अंत समय में वही वस्तु उसे याद आती है। इसलिए समय रहते हमें सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर सदैव भजन-सुमिरण में मन लगाना चाहिए। बुढ़ापे में जब हमारे हाथ-पैर काम करना बंद कर देंगे, जिभ्या इत्यादि सब अकड़ जायेंगे, तो उस वक्त हम भगवान के नाम का सुमिरन नहीं कर सकेंगे। जीवन पर्यन्त हम भक्ति के महत्व को समझ नहीं पाते और दुनियां की बातें सोचते-सोचते ही हमारा सारा समय बीत जाता है। संत ब्रह्मानन्द जी भजन में कहते हैं-

खाना पीना सो जाना,
सब काम है पशु समाना।।
क्यों देह मनुज की धारी,
हरि भजन करो सुखकारी।।

खाना-पीना तथा सो जाना, हमारे साथ सदा लगा रहता है और ये नित्य कर्म, तो पशु-पक्षी भी कर रहे हैं। फिर हममें और पशु-पक्षी में क्या अन्तर है? बाहरी रूप से तो हममें और पशु-पक्षी में कोई अन्तर नहीं है, लेकिन अन्तर केवल यही है कि हम प्रभु के ज्ञान को जानकर भजन-सुमिरन कर सकते हैं, पर अन्य योनियों के जीव ज्ञान को नहीं जान सकते। यह जो मनुष्य शरीर हमें भगवान की कृपा से मिला है, यह बड़ा अनमोल है। गुरु नानकदेव जी मनुष्य तन के महत्व को समझाते हुए कहते हैं-

लख चौरासी भरमदिया,
मानुष जन्म पायो।
कह नानक नाम संभाल,
सो दिन नेड़े आयो।।

यह मनुष्य शरीर बड़े भाग्य से मिलता है। लख चौरासी में भ्रमते-भ्रमते कितनी योनियां बीत गईं, तब कहीं जाकर भगवान की कृपा से हमें यह देव-दुर्लभ मानुष तन मिला है।

हम जब जन्म लेते हैं, उस समय हमारा कोई धर्म नहीं होता। पर, जब हम बड़े होते हैं, तो हमारी माताएं कहती हैं- तुम सिख हो, तुम ईसाई हो, तुम मुसलमान हो या तुम हिन्दू हो। तो ये धर्म हमने बाद में अपनाये हैं, परन्तु उससे पहले हमारा क्या धर्म था, वही जानना है? यह माया, संसार की चीजें मरने के समय हमारे साथ नहीं जाती हैं, यहीं पर रह जाती हैं, पर जो भगवान के नाम की कमाई हम करेंगे, वही हमारे साथ जायेगी। भगवान के उस सच्चे नाम को हमें जानना है।

सत्संग में हमें जो बातें सुनाई गई हैं, उन पर मनन करना चाहिए। यह नहीं कि इस कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। एक पौधा होता है, अगर उसमें खाद-पानी नहीं पड़ेगा, तो वह मुरझा जायेगा। इसी प्रकार मनुष्य के जीवन में सत्संग खाद और पानी का काम करता है। गुरु महाराज की कृपा से हम सबको आत्मज्ञान मिला है, हमें भजन-सुमिरन करना चाहिए। यदि हम भक्ति-भाव से भजन नहीं करेंगे, तो मायारूपी भवसागर में डूब जायेंगे।

जितने भी संत-महापुरुष संसार में आये, उन्होंने स्वयं भी अध्यात्म ज्ञान की अनुभूति की तथा दूसरों को भी ज्ञान देकर उन्हें सत्य और सदाचार के मार्ग पर लगाया। संत-महापुरुष मनुष्य के जीवन में आंतरिक बदलाव लाने का काम करते हैं। भगवान के बाहरी नाम अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन अंदर से वह शक्ति अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही है जो प्राणीमात्र के हृदय में समाई हुई है। कोई उसे राम कहता है, कोई कृष्ण कहता है, कोई वाहे गुरु कहता है, कोई अल्लाह कहता है, लेकिन ये भगवान के बाहरी नाम हैं। हमें सद्गुरु महाराज से अपने अंत:करण में छिपे भगवान के सच्चे नाम को अवश्य जानना चाहिए, तभी हमारी आत्मा का कल्याण होगा।

गुरु भक्ति अति कठिन है, ज्यों खांडे की धार

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! देखो, पहले देश पर आफत पड़ती थी, तब महापुरुषों के पास जाते थे और आशीर्वाद माँगते थे कि देश में क्यों ऐसी आपत्ति आ रही है, इसका क्या कारण है, जिससे इतनी भुखमरी हो रही है? क्यों इतना व्यभिचार बढ़ता जा रहा है? हमारे भारत का इतिहास साक्षी है। उस समय महापुरुष उन्हें मार्ग दिखाते थे। जो परमात्मा का नाम है, उसको मत भूलो। देखो, उसको भूलने पर तो मनुष्य को अनेक दु:ख हैं, अनेक संकट हैं। दु:ख-ही-दु:ख है मनुष्य को। सुख नहीं है। विदेशों में तुम कहते हो कि सुख है, मैं सत्य कहती हूँ कि कहीं भी सुख नहीं है। ठीक है, भौतिक चीजों से वे सुख चाहते हैं, पर वे सबसे अधिक दु:खी हैं, जिनकी बड़ी-बड़ी आयु हुई उन लोगों ने केवल सुख परमात्मा के नाम में ही समझा। उन्होंने उपमा दी कि जैसे कमल का फूल पानी में रहता है। सन्त लोग कहते हैं कि तुम संसार में उसी तरह से रहो, जैसे कमल का फूल रहता है पानी में। कमल की उपमा क्यों दी। उसका संबन्ध है कीचड़ से, पर उसमें वह कीचड़ व्यापता नहीं। क्योंकि वह न्यारा रहता है। कहा है-

कर से कर्म करो बिधि नाना।
मन राखो जहाँ कृपा निधाना।।

जहाँ महापुरुष इस मन के लिए इशारा करते हैं, वहाँ पर इस चंचल मन को रखो। यह चंचल मन उसी नाम में लीन हो जायेगा। फिर मनुष्य सन्तुष्ट हो जायेगा। अफवाहों में भक्त लोगों को नहीं आना चाहिए। देखा, भक्तों के इतिहास को। भगवान कृष्ण और सुदामा को गुरुमाता लकड़ियों के लिए जंगल में

भेजती थी। उनको आज हम मन्दिरों में पूजते हैं। जिनको गुरुमाता ने लकड़ियों के लिए भेजती थी कि जाओ बेटा, लकड़ी लाओ जलाने के लिए। वे जंगलों से लकड़ियाँ लाते थे। एक दिन गुरुमाता ने नाश्ता न बना करके उनको चने दे दिये। सुदामा को चने दे दिये। सुदामा छिप करके अपने आप चना खाने लगा। भगवान कृष्ण को नहीं दिया। श्री कृष्ण ने कहा कि दादा तुम क्या खा रहे हो ? तो सुदामा वोला कि ठंड से मेरा दाँत किटकिटा रहे हैं, आवाज कर रहे हैं। खा तो रहा था चने, पर छिपा दिया बात को। जिससे देखो, भगवान कृष्ण क्या बने और सुदामा क्या बना। उसी कपट के कारण सुदामा निर्धन बन गया। गरीब बन गया। सेवा तो दोनों ने करी थी। वह चना भी दोनों के लिए दिए थे, पर वह छिपा दिया और चुपके से खाने लगा। तो देखो, वह निर्धन बना। भगवान कृष्ण गुरुमाता के तीन पुत्रों को जीवित करके लाये यमराज के पास से। जब गुरुदीक्षा में सम्पूर्ण हो गये, तब गुरु महाराज जी के पास गये और बोले कि महाराज, मैं दक्षिणा देना चाहता हूँ। कहा- बेटा, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, मैं तुम्हारी सेवा से

बहुत प्रसन्न हूँ, मुझे कुछ नहीं चाहिए। कहा- नहीं, सफल विद्या कब होती है? जब दक्षिणा चुक जाती है। उन्होंने कहा- पर मुझे तो नहीं चाहिए, तुम अपनी गुरु माँ से पूछो। यदि तुम्हारी गुरुमाता को किसी चीज की आवश्यकता है, तो दे देना। तब माँ ने कहा कि तुम वास्तव में दक्षिणा देना चाहते हो, तो मेरे पुत्रों को जीवित करके लाओ। तब, यमराज से तीनों पुत्रों को उन्होंने लाकर दिये। यह इतिहास साक्षी है। इसी तरह जब तुम्हारे ऊपर कोई समस्या आई, तब दसों इल्जाम लगाने लग जाते हो, बिना सोच विचार के। तो क्या होगा? मेरा तो कुछ भी नहीं बिगड़ेगा, पर तुम हानि में रहोगे। देखो, जैसे सूर्य को दीपक दिखाना कुछ भी महत्व नहीं रहता, सूर्य को रोशनी में दीपक की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि वह फीका पड़ जायेगा, इसी तरह से महापुरुषों की सेवा करके मनुष्य मोक्ष के मार्ग को जाता है। वैसे परिवार की भी तो सेवा कर रहा है, राजा की भी तो सेवा कर रहा है। पर महापुरुष की सेवा का क्यों इतना महत्व बताया? गुरु परिवार को क्यों इतना महत्व दिया? देखो, कैसे-कैसे इतिहास आते हैं। गुरुमाता के लिए मणिमय कुण्डल शिष्य लाया। सेवा करते-करते इस तरह से बूढ़े बन गये कि बाल सफेद हो गये लकड़ियाँ ढोते-ढोते। आजकल के भक्तों को तो सेवा की जरूरत ही नहीं पड़ी। पूछ लीजिये कभी भी ये लकड़ी काट के नहीं लाये। और जब कोई सेवा का मौका आया, तो दसों नुक्ताचीनी करने लग जाते हैं, तो इससे तुम भ्रमित होगे। वास्तव में तुम ज्ञान को नहीं समझे कि ज्ञान क्या है! जैसे किस्म-किस्म के फूल, एक सुन्दर हार के रूप में पिरो दिये, ऐसे ही हमने भिन्न-भिन्न जाति के, भिन्न-भिन्न वर्ग के, भिन्न-भिन्न धर्मों के लोगों को, उन्हीं के अन्दर की चीज को, उन्हीं के अन्दर जना दिया। अब उनको क्या करना चाहिए? उनको उसमें मन को लगाना चाहिए, सबके ही अन्दर वह चीज होती है। उसमें मन लगाना चाहिए। मन न लगा करके उस मन को बाहर लगाने लगे। देखो, एक कार्य के लिए कुछ आदमियों को लगाया। वह कार्य न करके और उपद्रव करने लग गये। मैं जिक्र तो नहीं करना चाहती हूँ। बहुत से समझ गये होंगे। वे फिर क्या बन गये? बहुत कुछ अपने को समझने लग गये। देखो-

जैसे किस्म-किस्म के फूल, एक सुन्दर हार के रूप में पिरो दिये, ऐसे ही हमने भिन्न-भिन्न जाति के, भिन्न-भिन्न वर्ग के, भिन्न-भिन्न धर्मों के लोगों को, उन्हीं के अन्दर की चीज को, उन्हीं के अन्दर जना दिया।

गुरु भक्ति अति कठिन है,
ज्यों खाण्डे की धार।
हाले डोले कट मरे,
निश्चल उतरे पार।

यह किसके लिए कहा है जो कपटी और छलों वाले होते हैं, उनके लिए। कहा है- भक्त को हिलना डुलना नहीं चाहिए। जैसे अन्धे के लिए लकड़ी का सहारा है। भक्त के लिए नाम का सहारा है, भक्त के लिए तो कहा है कि- 'मैं तो उन सन्तों का दास, जिन्होंने मन मार लिया।'

तुमको तो हमने दिया था एक ज्ञान और सेवा का मौका। कहाँ तो लिखा कि मैं उन सन्तों का दास, जिन्होंने मन मार लिया। दासों का दास करके लिखा हुआ है। शास्त्र के प्रमाण हैं और जब तुम पर तुलती है बात, तब तुम दूर भाग जाते हो। दसों बादशाहों के इतिहासों को देखो। अमरदास जी व्यास नदी से जल ले जाते थे गुरु महाराज जी के लिए, जो उनके समधी थे। और उनके स्नान के लिए रातों-रात पानी ले जाते थे। समधी को उन्होंने गुरु धारण किया और किस तरह से सेवा की, न्यौछावर हो गये। गुरु-परिवार के लिए न्यौछावर हो गये। दरअसल यह ज्ञान तुम्हारी समझ में नहीं आया। तुमसे ज्ञान का संबन्ध है भाई! तुम मेरी जाति के नहीं हो, हमारे कुल के नहीं हो? वैसे क्या है हमारी जाति? हमारी मनुष्य की जाति है और ज्ञान हम देते हैं। केवल ज्ञान से तुम्हें हमारी जानकारी है और ज्ञान से तुम जानते हो कि ये श्रेष्ठ हैं। इसलिए भ्रमित नहीं होना चाहिए। भजन करो, सुमिरण करो, जहाँ तुम दस मिनट करते हो, वहाँ दो घन्टा करो, सवेरे प्रातःकाल उठ करके। इस मन को बार-बार सुमिरण करने में लगाओ, भजन में लगाओ। कबीर साहब की जीवनी को देखो। किस तरह से वे फक्कड़ बन के रहे। किस तरह से इस नाम में अपने को लीन कर दिया। करके देखो, तब तुम्हें अनुभव होगा। वास्तव में तुमने नाम को पहचाना ही नहीं कि यह नाम क्या है? भक्त तो सबके अन्दर में उसको एक ही समान समझता है। इसी तरह से भजन करो, सुमिरण करो। यही जीवन का सार है, न कुछ साथ में आया है और न कुछ ले जायेगा।

मुट्ठी बाँधे आया जगत में,
हाथ पसारे जायगा।

अब हंस जयन्ती आने वाली है, जगह-जगह तुम भक्तों को प्रोग्राम करना चाहिए। वो हमारे लिए सबसे श्रेष्ठ पर्व है, क्यों है शिष्यों को? जिस महापुरुष ने इस जीवन का ध्येय जना दिया, उनकी

यह जयन्ती है। यदि वे नहीं जानते, तो हमें क्या पता था कि इस जीवन में जानना कुछ बाकी रह गया या नहीं। आपलोग जगह-जगह सत्संग प्रोग्राम रखो। महात्माओं ने घर छोड़ा, परिवार छोड़ा, पत्नी छोड़ी और ब्रह्मचारी जीवन निभा रहे हैं। काहे के लिए? तुम लोगों के जीवन के लिए, तुम लोगों की सेवा के लिए, ताकि मानव की सेवा हो। इनको मौका दो, सेवा करने का। अपने-अपने इलाकों में सत्संग सुनाओ। हमें अपने लक्ष्य को पूरा करना है। जिस उद्देश्य के लिए हम आये हैं, हमें उस उद्देश्य को पूरा करना है, भले ही इस मार्ग में कितना ही दु:खी कर देंगे, कितने ही लोग इल्जाम लगावें। कोई भी कुछ भी करे। जब तक इस शरीर में प्राण हैं, तब तक हमें इस पर चलना है। यह हमारा लक्ष्य है। यह हमारा सिद्धान्त है। इसको हम सार समझते हैं। जो आनन्द इस ज्ञान में आता है, इस सत्संग में आता है, हरि चर्चा में जो समय बीतता है, उसमें जो आनन्द आता है, वह कहीं नहीं आ सकता। बहुत-से लोग सत्संग का ध्येय भूल करके और प्रपंचों में लग गये और बातों में मन लगाने लगे। इससे भ्रमित ही तो होंगे। इससे अशान्ति ही तो होगी। अगर मैं तुम्हें कुएँ के पास ले जाऊँ और पानी भी तुम्हारे मुँह के अन्दर डाल दूँ, पर जब तुम दाँत ही बन्द कर लोगे, तो मैं क्या करूँगी। जब पीना ही नहीं चाहते तुम, तो मेरा दोष क्या है?

भक्त किसमें शोभा देता है? जब वह वास्तव में अपने लक्ष्य को पूरा करता रहता है। जैसे पतिव्रता नारी अपने धर्म में ही शोभा पाती है, ऐसे ही भक्त अपने भक्ति-मार्ग में तभी अच्छा लगता है, जब वह भ्रमित नहीं होता है। तो यही लक्षण है भक्तों के। जो लोग दुर्जन बन जाते हैं, उनकी बातों को नहीं सुनना चाहिए। उनके दर्शन करने को महापाप बताया शास्त्रों में। वे तुम्हें मार्ग से गिराने की कोशिश करेंगे, उनके दर्शन को भी शास्त्रों में महापाप बताया। तुम्हें उनकी बात नहीं सुननी चाहिए, भ्रमित नहीं होना चाहिए। तुम्हें जो ज्ञान दिया है, वह ज्ञान तुम्हारे अन्दर है, तुम स्वयं समझ सकते हो। तो तुम भजन करो, सुमिरण करो। गुरु महाराज जी का ज्ञान जो तुम्हारे पास है, उसी ज्ञान को जनाने के लिए हम आये हैं, बाकी और हमारा मकसद ही क्या है?

जैसे पतिव्रता नारी अपने पवित्रता धर्म में ही शोभा पाती है, ऐसे ही भक्त अपने भक्ति-मार्ग में तभी अच्छा लगता है, जब वह भ्रमित नहीं होता है। तो यही लक्षण है भक्तों के। जो लोग दुर्जन बन जाते हैं, उनकी बातों को नहीं सुनना चाहिए।

देखो! आध्यात्म-मार्ग में तकलीफ बहुत ज्यादा है। बहुत ज्यादा दु:ख है। एक संसारी मनुष्य तो कुछ भी कर सकता है, उसको तो कोई कुछ भी नहीं कह सकता। पर आध्यात्म मार्ग में अनेक इल्जाम लगाने की कोशिश करते हैं, अनेक कष्ट देने की कोशिश करते हैं। जो सच्चाई का पाठ अदा करता है, सचमुच में सबसे ज्यादा वही कुचला जाता है। मुझे जानकी जी का जीवन बहुत याद आता है। अगर उनके जीवन में सुख होता, तब उन्हें जरूर मिलता। उनको तो दो पुत्र भी हो गये थे और भगवान राम भी मिल गये थे, सब कुछ था, पर अन्तिम में वह वही कहती है दु:ख के कारण से, हे धरती तू फट जा, मैं झट तुझमें समा जाऊँ। धरती माँ, अब मैं इन दु:खों को नहीं सह सकती हूँ। मैं तुममें अब समाना चाहती हूँ। जहाँ पर पुत्र भी थे, पति भी था, राज्य भी था, पर क्या चाहा उसने? मौत को चाहा। हमेशा महान् शक्तियाँ जब अनेक दु:खों से जकड़ जाती हैं, तब क्या चाहती हैं? वे मौत चाहती हैं। महापुरुष दुष्टों से लड़ना नहीं चाहते, दुष्टों से शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते है। क्यों? क्योंकि इनकी प्रकृति और उनकी प्रकृति मिल नहीं सकती है। तब वे क्या चाहते हैं? अपना चोला चेन्ज करना चाहते हैं। क्योंकि इस शरीर को वे दु:ख देना नहीं चाहते। वे समझते हैं कि यह अविनाशी आत्मा है, यह नहीं मरती, चलो इस चोला को छोड़ कर दूसरे में प्रवेश कर लेंगे। मैं सच कहती हूँ कि महापुरुष चोला क्यो छोड़ते हैं? जब उनके जीवन में अनेक दु:ख आने लग जाते हैं, तब वे इस चोले का त्याग करना चाहते हैं। बड़ी-से-बड़ी महान शक्तियों के जीवन में यही बीता। दुनियाँ उनके चोला त्यागने के बाद उनको पूजती है, आराधना करती है। जब वे जीते-जी आते हैं, तब मनुष्य उनको समझने की कोशिश नहीं करते हैं। वे उनको साधारण मनुष्य समझते हैं। जब वे चले जाते हैं, उसके बाद उनकी मूर्ति को पूजना शुरू करते हैं। लेकिन तब वह मूर्ति क्या बताती है? कुछ भी नहीं बताती। तब तुम जब चाहो, तब उसे खिलाओ, जब चाहो तब सुलाओ, जितनी देर तक चाहो दरवाजा बन्द रखो, दरवाजे बन्द कर दो या दरवाजे खोलो, तुम्हारी मर्जी! या न खोलो तम्हारी मर्जी। तब तो वह तुम्हारी मर्जी हुई। वे स्वतंत्र नहीं रहते हैं। इसलिए भजन-सुमिरण करो, तभी ज्ञान समझ में आयेगा।

मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, कबहूँ न आती जाती

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! हम लोग दो दिन से सत्संग का आनंद ले रहे हैं और यह सत्संग श्री भोले जी महाराज के जन्म-दिवस के उपलक्ष में रखा गया है, जिसमें हमें हर बार कुछ नया सीखने का मौका मिलता है। इस बार श्री भोले जी महाराज का जन्म दिवस है, इस उपलक्ष में हमारे सभी बंधु, मित्र और भक्त समाज यहां आया है। मैं सबको अपनी संस्था की तरफ से आशीर्वाद देती हूं। हमारे संत-महात्मा और सभी भक्तजन सत्संग के लिए एकत्र होते हैं। यहाँ भजनों के माध्यम से सत्संग के शब्दों को पिरोया है, जो सच में दिल में उतर जाते हैं; क्योंकि जीवन की सत्यता हम भूल नहीं सकते और जीवन ही सत्य है। आना भी सत्य है, जाना भी सत्य है, यह क्रम अनादि काल से चला आ रहा है-

आये हैं सो जाएंगे,
राजा रंक फ़कीर।
एक सिंहासन चढ़ि चला,
एक बंधा जात ज़ंजीर।।

आए सभी हैं, राजा भी आया है, रंक भी आया है; लेकिन सभी को जाना भी है संसार से। यह जो इतना बड़ा आयोजन किया गया है, इसका लक्ष्य यही है कि हम अपने जीवन को व्यर्थ ना गंवाएं। हमारे धर्म शास्त्रों में यही बातें लिखी हैं कि हम संसार में क्यों आए हैं? किसी पुण्य कार्य को करने के लिए आए हैं; हम कुछ अच्छा करके जाएं; क्योंकि यह मानुष चोला आसानी से नहीं मिलता, 84 लाख योनियों में भरमते-भरमते मानुष चोला पाया है।

करके दया दयाल ने,
मानुष जन्म दिया।

बंदा ना करे भजन तो,
भगवान क्या करे।।

हमें मानुष चोला दिया और उसमें सुंदर बुद्धि दी, सुन्दर सोच दी। इस उत्तम मानुष चोले में हमने क्या करना है? अपने इष्ट को खोजना है। लेकिन खोजते-खोजते उम्र चली जाती है। एक माता सुबह कह रही थी कि मुझे अभी भी लगता है कि शायद मैं और जिऊंगी। उसकी उम्र लगभग 90 वर्ष की होगी। मैंने कहा ऐसा नहीं है, जब समय आएगा, तो वह इच्छा भी समाप्त हो जाएगी। आप बस अब घर में लेटे-लेटे भजन करो, सुमिरन करो, नाम का सुमिरन करो; क्योंकि संतों ने कहा है कि भगवान के नाम की जो कमाई है, वही दौलत हमारे साथ जाएगी। इसीलिए कहा कि सद्गुरु महाराज ज्ञान रूपी अंजन देते हैं, जिससे जीव के अज्ञान का विनाश होता है।

ज्ञान अंजन सतगुरु दिया,
अज्ञान अंधेर विनाश।
हरि कृपा ते संत भेंटिया,
नानक मन प्रकाश।।

हम गुरु नानक देव जी की वाणी से बहुत शिक्षा लेते हैं; क्योंकि ऐसा कोई समय नहीं हुआ है, जब किसी न किसी महापुरुष का जन्म न हुआ हो। जब गुरु नानक देव जी का अवतरण हुआ, उनके पिता की कपड़ों की दुकान थी। जब वे दुकान पर बैठकर सामान बेचते हैं, तो गिनते-गिनते एक, दो, तीन करते-करते तेरह अर्थात तेरा, तो उन्होंने कहा कि जब सब कुछ तेरा ही है, तो मेरा क्या है? और उन्हें संसार से वैराग्य हो गया, वैराग्य जब होता है मनुष्य को, तो उसकी सोच बदल जाती है। खैर, जब वैराग्य हुआ, तो उन्होंने उस प्रभु अकाल पुरुष की खोज की, उन्होंने ढूंढ़ा; ऐसे नहीं प्राप्त होता है, ढूंढ़ा जाता है। इसलिए संतों ने कहा-

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां,
गहरे पानी पैठ।
मैं बावरी बूडन डरी,
रही किनारे बैठ।।

सुंदर चीज़ों के एडवरटाइजमेंट आते हैं, ऐसा खाओ, ऐसा पहनो; क्या वह

सब एडवरटाइजमेंट देखकर के हमारी भूख मिटती है? ऐसे ही क्या केवल सत्संग सुनकर हमारी ज्ञान की प्यास मिटती है? नहीं, जब तक हम स्वयं सेवन नहीं करेंगे, ज्ञान का अनुभव नहीं करेंगे, तब तक हम उसे समझ नहीं सकते हैं। इसलिए कबीर ने कहा है-

मैं कहता हूं आंखों देखी,
तू कहता है कागज लेखी।
तेरा मेरा मनुआं,
कैसे एक होई रे।।

आज तो विज्ञान का चमत्कार है, आज बुद्धि जिसकी ज्यादा होती है, जो ज्यादा लिखित-पढ़त करता है, लोग उसको बहुत समझदार समझते हैं। होता ही है कि ये डिग्री लेते हैं, स्कॉलर लेते हैं, प्रोफेसर होते हैं; लेकिन कबीर कहते हैं कि-

मैं कहता हूं आंखों देखी,
तू कहता है कागज लेखी।
तेरा मेरा मनुआं,
कैसे एक होई रे।।

महापुरुष अपने अनुभव की बात कहते हैं और संसारी मनुष्य पढ़ी-लिखी बातें कहता है। इसलिए संत कहते हैं कि हे मानव, तेरी सारी उमर बीत गई पढ़ते-पढ़ते। पर, उस प्रभु के नाम को लेना भूल गया और जब अंतिम समय आता है, तब सोचता है कि अब समय नहीं है, अब समय चला गया है। इसीलिए तो ज्ञान रूपी अंजन को लिया जाता है- **"ज्ञान अंजन सतगुरु दिया"**, वह सतगुरु उस ज्ञान को जनाते हैं, जिस ज्ञान से हमारा जीवन धन्य हो जाता है। आप मीराबाई की कथा पढ़ते हैं, राजस्थान से बहुत से भक्त हैं। मीराबाई भी एक राजा की बेटी थी, छोटी-सी थी, अपने चौबारे में खड़ी थी। एक दिन बारात जाती है नीचे से, तो वह मां से कहती है- मां, यह क्या है? मां कहती है- बेटी, यह बारात है, लड़की का विवाह है, उसका दूल्हा जा रहा है, वो दुल्हन को ब्याहेगा और फिर अपने साथ ले जाएगा। तो मीरा ज़िद करने लगती है, जैसे छोटा बच्चा करता है कि दूल्हा क्या होता है? मेरा दूल्हा कौन होगा? जब बहुत ज़िद करने लगी, तो सामने भगवान कृष्ण की मूर्ति थी, उसकी तरफ इशारा करके कहा कि यह तेरा दूल्हा होगा। देखो, बच्चे ज़िद भी करते हैं और हम उनकी ज़िद को पूरा भी कर देते हैं; इतना जानते भी हैं कि ये जिद कर रहे हैं। मीराबाई की ज़िद में जब मां ने भगवान की मूर्ति दिखाई, तो मीराबाई ने मूर्ति हृदय से लगा ली और कहा मेरा तो अब यही पिया है। विवाह भी हुआ, फिर भी उसकी लगन भगवान कृष्ण के प्रति ही रही। वह कहती है-

मात्र टीवी में देखने से हमारी भूख नहीं मिटती है; प्यास लगती है, तो हम पानी को खोजते हैं। पानी से हमारी प्यास बुझती है। यह अध्यात्म की जो प्यास होती है, यह आत्मा के ही ज्ञान से बुझती है।

लोकन के पिया परदेश बसत हैं,
लिख लिख भेजें पाती।
मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं,
कबहुँ ना आती जाती।।

यह जो सांसारिक पिया है, आज आया, कल चला जाएगा। इस संसार से चला जाएगा और जो हृदय का पिया है, वह तो हमेशा हृदय में ही रहता है। मीराबाई ने खोजा कि मेरा कृष्ण कहां है! संतों के पास गई, गुरु के पास गई; संतों की कृपा से मीरा को भगवान की अपने हृदय में ही प्राप्ति होती है, गुरु के प्रताप से भगवान की प्राप्ति हुई।

मात्र टीवी में देखने से हमारी भूख नहीं मिटती है; प्यास लगती है, तो हम पानी को खोजते हैं। पानी से हमारी प्यास बुझती है। यह अध्यात्म की जो प्यास होती है, यह आत्मा के ही ज्ञान से बुझती है। इसीलिए भगवान कृष्ण भी अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन-

नाना शास्त्र पठेल्लोके,
नाना देवत पूजनम्।
आत्मज्ञानं बिना पार्थ,
सर्वकर्म निरर्थकम।।

जो भगवान का ज्ञान है, वह तो हमारे अंदर है; लेकिन हम उसको बाहर ढूंढ रहे हैं। जब कुंभ मेला होता है हरिद्वार में या प्रयागराज में, तो हज़ारों के हज़ारों संत वहां अपना डेरा लगा देते हैं और देखते हैं कि भक्त समाज आता है; कि कोई तो संत होगा, जिसके पास यह ज्ञान होगा; वह पोटली खोलेगा आत्म ज्ञान की। किसी के पास तो होगा; क्योंकि भगवान कहते हैं कि मैं तेरे ही अंदर हूं; मैं बाहर नहीं हूं।

मन मंदिर तन भेष कलंदर,
घट ही तीरथ नावां।
एक शबद मेरे प्राण बसत है,
बहुरि जन्म नहिं आवां।

तो यह सब हमें गुरुवाणी में, संतों की वाणी में सुनने को मिलता है। महापुरुष हर एक युग में मौजूद होते हैं, पर हम आलस के कारण, अभिमान के कारण, भय के कारण, हम जानना नहीं चाहते। भगवान कृष्ण भी अर्जुन को यह समझाते हैं- अर्जुन तेरा और मेरा जन्म अनेकों बार हो चुका है, कई बार तू भी आता है और मैं भी आता हूं और तुझे हमेशा आत्मज्ञान दिया जाता है; लेकिन तू भूल जाता है और मैं याद रखता हूं। तो संसार के कार्यकलापों में, इस कार्य

को भूल जाता है; अर्जुन तू फिर इस ज्ञान को मांग रहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के मैदान में ज्ञान दिया। हे अर्जुन, तू इस अध्यात्म के ज्ञान को प्रत्यक्ष रूप से जान! ज्ञान रूपी अंजन हमारे जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है, सर्वोत्तम खजाना है। हे अर्जुन, तेरे सामने तेरे सब बड़े भाई भी हैं, छोटे भी हैं; परिवार भी है, गुरु भी है; लेकिन जब तू अध्यात्म को जान जाएगा, तो अपने वास्तविक दुश्मन को पहचान जाएगा। तो हमें अनादि काल से शिक्षा मिलती है कि हे जीव, प्रभु भजन की कमाई कर! जब भजन हम करते हैं, भजन की कमाई करते हैं, तो उस कमाई को कोई लूट नहीं सकता है। इसीलिए भगवान भी कहते हैं कि संसार की कमाई तो कोई चोरी कर लेगा, कोई ले जाएगा; पर जो तेरी अध्यात्म की कमाई है, उसको कोई ले जा नहीं सकता है; यह समझने की बात है। पूछने से ज्ञान प्राप्त होता है, तब शांति मिलती है। हम शरीर से कर्म कर रहे हैं, हम अपनी आत्मा के लिए नहीं सोच रहे, जब हम आत्मा को परमात्मा से मिला देते हैं, तो वही परम धाम है। बोर्ड में लिखने से परम धाम नहीं होगा। इसलिए जीव के कल्याण के लिए समय-समय पर महापुरुष आकर रास्ता बताते हैं।

हमारा सौभाग्य था कि हमें श्री माता जी के साथ रहने का मौका मिला, जिस तरह श्री भोले जी अपने श्री महाराज जी के अनुभव बताते हैं, लेकिन हमारा सौभाग्य नहीं था उनके दर्शन करने का। हमें श्री माता जी के दर्शन हुए। हर समय बड़े-बड़े महापुरुष आते हैं और वह जीव के कल्याण की बात करते हैं। इसीलिए कहते हैं- खाना-पीना-सो जाना, तो सबके साथ लगा है, पशु भी खाता है, पशु भी सोता है, मनुष्य के ये सब काम पशु के समान ही हैं;

क्यों देह मनुज की धारी।
सुनो सुनो बचन नर नारी।
हरि भजन करो सुखकारी।।

क्या फर्क है मानव, महामानव और पशु में, पशु वह नहीं कर सकता, जो मनुष्य कर सकता है। जो मानव नहीं कर सकता, वो महामानव करता है और महामानव जो होता है, वही भक्त की उपाधि प्राप्त करता है। भक्त प्रहलाद ने कितना कष्ट सहा, भगवान राम ने कितना कष्ट सहा! भगवान बुद्ध ने कितना कष्ट सहा! किसलिए, आज तो बहुत आसान हो गया है। हम सब बड़े आराम से बैठे हैं, खा रहे हैं, पी रहे हैं, अच्छे-अच्छे व्यंजन खा रहे हैं, अच्छा-अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पर सिर्फ एक प्रभु नाम का सहारा लेकर हम यह सोच पाते हैं कि हम समाज के लिए, हम अपने लिए क्या कर सकते हैं; क्योंकि जब संसार से जाएंगे, तो क्या साथ जाएगा? वह जो यहां का है, वह यहीं रह जाएगा। इसीलिए भक्त समाज के लिए संत-महात्मा कहते हैं कि जीवन का ध्येय अगर एक ही हो, तो उसे हम प्राप्त कर सकते हैं। अगर हमारे सामने अनेक ध्येय होंगे, तो हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। जब माटी में कोई बीज बोते हैं, तो बीज को मिट्टी में मिला देते हैं, तब कुछ दिन बाद उसमें अंकुर आता है, फिर बढ़कर वह फलदार वृक्ष बनता है।

पूछने से ज्ञान प्राप्त होता है, तब शांति मिलती है। हम शरीर से कर्म कर रहे हैं, हम अपनी आत्मा के लिए नहीं सोच रहे, जब हम आत्मा को परमात्मा से मिला देते हैं तो वही परम धाम है।

एक कहानी आती है कि नारद जी स्वर्ग में जाते थे, तो वे जहाँ बैठते थे, उनके आने के बाद उस स्थान की सफाई कर दी जाती थी। एक दिन वो मुड़कर के दोबारा गए तो देखा, जहां वो बैठे थे, वहां वो लोग सफाई कर रहे हैं; तो नारद जी को बड़ा आश्चर्य लगा, तो उन्होंने वहाँ के पार्षदों से पूछा, तो उन्होंने कहा कि नारद जी, क्योंकि तुम अज्ञानी हो, तुझे संसार का तो ज्ञान है, पर आत्मा का ज्ञान नहीं है; तुम अज्ञानी हो, निगुरे हो। इसलिए तुम अशुद्ध हो। नारद जी को जागृति आई कि मुझे अध्यात्म को जानना है। मैं इतने देवी-देवताओं के सामने, भगवान विष्णु के सामने खड़ा होता हूं, फिर भी मैं गुरु के बिना अज्ञानी हूं। फिर उन्होंने गुरु धारण किया और अध्यात्म ज्ञान को जाना। ये अध्यात्म के उदाहरण ही हमारे जीवन को सुधारते हैं। इसीलिए कहा कि-

कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।

कलियुग में केवल नाम का ही आधार है। भगवान ने अच्छा समय दिया, अच्छा पहनने को दिया, अच्छा खाने को दिया, सब कुछ दिया, पर हृदय मंदिर में एक स्थान ऐसा दिया, जिसमें हमारा प्रभु विराजमान है। संतों ने कहा कि कलियुग में केवल नाम का आधार है। जब तक हम नाम को नहीं जानेंगे; तब तक हमारा भला नहीं होगा। यह शरीर का नाम तो माता-पिता का दिया हुआ है, हमारे नामकरण में ब्राह्मण देवता ने नाम दिया; लेकिन इस जन्म से पहले कौन-सा ऐसा नाम था, जो हमारे अंदर मां के गर्भ में भी था। जो हमारे प्राणों में समाया हुआ, उसी प्रभु के नाम को अपने प्राणों में, अपने हृदय में खोजना है।

KNOWLEDGE CAN BRING A POSITIVE CHANGE IN SOCIETY

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

Dear Premies, You are listening to spiritual songs and discourses for some time. Some of you may be thinking of the upcoming Badrinath trip. Your mind may be thinking of different aspects of the journey, for example–what would Badrinath look like? How will the idol of God appear? The preparation or wait time for this journey has elapsed so quickly, and similarly our life is progressing at an accelerated pace. When we do the right actions (karma), only then we become entitled for grace. When we render service towards Guru Maharaj Ji, we receive his grace. It is said:

Teacher's statue is excellent for meditation,

Teacher's sandals are excellent for offering prayers to.

Teacher's words are equivalent to mantras,

His grace bestows liberation itself.

When the disciple stays connected to his teacher, follows his instructions and meditates regularly, only then Guru Maharaj Ji showers his grace. And only with these blessings can he achieve liberation.

Immense value is attributed to spiritual discourses. Farmers prepare their fields at the first sign of rain with the hope for speedy growth of seeds into crop. Discourses are similar to rain. When the barren lands of ignorance receive the rains of spiritual discourses, then grows the fruits of wisdom and knowledge in the hearts of individuals. Those of you who are going to Badrinath for discourses and darshan are very fortunate. We are listening to the methods of soul realization. Those who enter the tenth gate, they only obtain the knowledge of the soul. Every person cannot understand this Spiritual-knowledge. Some people have come here merely to see the ashram premises and some will go to Badrinath only as tourists. No one wonders about the great austerity that Nar-Narayan performed which made Badrinath a holy place. What practice did Nar-Narayan perform. What meditation were they engaged in? When great souls meditate at a place, that place turns holy. Take this ashram for instance. All spiritual discussion and discourses talk of the path shown by Shri Hans Ji Maharaj. Great souls show a simple path to be followed which would lead to upliftment of human kind. He lit the lamp of spirituality in so many hearts. In the ashram we elucidate and practice those methods which lead to self-realization. There are great universities teaching Sanskrit, but there is no college that discusses and teaches Spiritual Knowledge. On this festival of Ganga-Dussehra, many people came to obtain Spiritual Knowledge. This is truly great as it would lead to their welfare.

Man is totally devoid of peace today. But the causes of this are not external things like the earth, trees, sun, moon or sky. It is actions of his fellow men, which has led to this situation. Some people have developed evil tendencies of disturbance and destruction. In these dark times, only spirituality can show the right path to human

beings.

It's an auspicious festival today. So you must listen to spiritual discourses, learn Spiritual Knowledge and then practice meditation. This institution is providing you the right guidance. True Knowledge must be based on teachings of holy books. Based on the principles of righteousness, it must live in the hearts of individuals and be indestructible. You can ask those who meditate regularl -the mind is tamed only by Holy Name. When the mind is dissolved completely in the Holy Name, then man attains salvation. When we get the grace of Shri Guru Maharaj Ji, then we receive True Knowledge. And grace is received when we abide in the words of our teacher. The words of teacher act like medicine and cure many diseases. By following the path shown by our teacher, life achieves complete success.

One who obeys the instructions of his teacher,

Need not be afraid of anything in the three worlds.

The disciple need not be fearful of anything. No power can affect him since he is protected by an indestructible spiritual force. Prahlad was tortured by his father but he had faith in God, and God protected him.

If you have true love and desire for anything then you will truly achieve it. It is a great day that buses full of people are travelling north towards Bardhi-vishal to get darshan or vision of God. He meditated there and overcame the limitations of senses.

You have tied Guru Maharaj Ji in the ropes of love and affection, and he is taking you all to Badrinath. This depicts the concepts of "the world is one family" (vasudev kutumbkam), where there are no divisions on the basis of birth, religion or caste but rather the connecting link is Knowledge of God.

When a worker assembles many different flowers in a single thread to tie a garland then it reaches the necks of great saints. Similarly, Guru Maharaj Ji has tied people of different ideologies, different religions and faiths through the unique thread of Knowledge into harmonious unity.

People are killing each-other through guns and bombs in the name of religion. True religion never teaches violence. You must have read about Meerut. Fighting continued for many days. If the warring factions had milk and food products, then the fighting would not have stopped! But the incessant cries of kids and women lead to the halt of the killings. Man is burning inside due to focus on differences and enmity with his fellow men.

The Mahabharat war was initiated to protect righteousness. Similarly, today man is destroying others whether they are doctors, businessmen, scientist or politicians. History is repeating itself. I am engaged in spiritual programs every Sunday, but people tell me that a beautifully televised Ramayan is shown for half an hour every Sunday. So what is the message of Ramayan?

Lord Ram spent his entire life in protection of honor and righteousness. There were problems in Ram's family also. Man's thinking and tendencies get degenerated and this leads to wicked behavior. But wise teachers share Knowledge to uphold righteousness and protect the needy. Lord Ram was against hatred and possessed great discernment, high philosophy and benevolent disposition. When Ram reached the kingdom of King Nishadraj, he was readily offered the entire kingdom. Nishadrad said, "Ram, you have crossed the kingdom of Keikayi and King Dashrath. This is my kingdom now, and I offer it at your holy feet. You be the king here and rule over its population and Janaki will be the queen. I will be ready to serve you".

Nishadraj demonstrated his deep faith in God and offered his entire possessions to Ram. This pleased Ram so immensely that he gave priceless blessings to Nishadraj.

God teaches his disciple like his own child. When a child calls upon his mother with great love, then although the mother may be very angry but she comes and caresses him.

हलाहल से त्राण दिलाने का पर्व है सावन की शिवरात्रि

सावन की शिवरात्रि की महिमा की चर्चा से पहले आप के समक्ष मैं इसके पौराणिक पृष्ठभूमि की जानकारी दे देना उचित समझता हूं। क्योंकि सनातन संस्कृति की विशेषता है कि वह प्रतीकों के माध्यम से गूढ़ और गहन जीवन-दर्शन को जनमानस तक पहुंचाती है। सावन की शिवरात्रि भी ऐसा ही एक आध्यात्मिक पर्व है, जिसका मूल स्रोत समुद्र मंथन की पौराणिक कथा में मिलता है। देवताओं और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से निकले अनेक रत्नों में सबसे पहले जो वस्तु प्रकट हुई, वह था भयंकर हलाहल-विष। उसकी ज्वाला से सृष्टि का समूल नाश संभावित था। तभी भगवान शिव ने करुणा, साहस और पूरे संसार के जीवों के संरक्षण के उत्तरदायित्व का परिचय अपने स्वयं के आचरण से दिया और उस को स्वयं पी लिया तथा उसे कंठ में धारण कर नीलकंठ नाम से प्रसिद्ध हो गए। पुराण का यह प्रसंग केवल कथा नहीं, चेतना है कि जब समाज संकट में हो, तो कोई एक शिवतुल्य आत्मा आगे बढ़कर उस संकट रूपी हलाहल को आत्मसात करती है, ताकि संपूर्ण सृष्टि की रक्षा हो सके। सावन की शिवरात्रि, शिव के इस आत्मोत्सर्ग और तपश्चर्या का स्मृति पर्व है। आज का युग भले ही वैज्ञानिक प्रगति का युग हो, परंतु एक नया हलाहल हमारे सामने है- वातावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, नदियों का सूखना, प्लास्टिक प्रदूषण, जैव विविधता का संकट आदि। यह पर्यावरणीय संकट केवल भौतिक नहीं, आध्यात्मिक भी है। जब प्रकृति की लय बिगड़ती है, तो प्राणिमात्र का जीवन असंतुलन में डूब जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में सावन की शिवरात्रि हमें सजग करती है कि शिव की भांति हमें भी **"नीलकंठ"** बनना होगा। हलाहल को रोकने के लिए पहले ही कदम उठाने होंगे। यदि हम समय रहते जल, वायु, भूमि, वनस्पति और जीवों का संरक्षण नहीं करेंगे, तो यह हलाहल हम सबको नष्ट कर देगा। हमारी आने वाली पीढ़ियों को नाना प्रकार की बीमारियों और विसंगतियों से गुजरना पड़ेगा।

श्रावण की शिवरात्रि पर विशेष

शिव का समस्त स्वरूप प्रकृति से जुड़ा है- कैलाश पर्वत उनका धाम, गंगा उनकी जटा में, चंद्रमा उनके मस्तक पर और नाग उनके सखा। वे सिखाते हैं कि जीवन की रक्षा तभी संभव है जब हम प्रकृति से प्रेम करें, उसका आदर करें, और संसाधनों का संतुलित उपयोग करें। सनातन धर्म केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन का विज्ञान है। सावन में जो व्रत, उपवास, रात्रि जागरण, रुद्राभिषेक और सात्विक आहार-विहार के नियम बताए गए हैं, वे सभी व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से शुद्ध करने के उद्देश्य से रचित हैं। वर्षा ऋतु में रोगों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसलिए संयमित आहार और उपवास शरीर

को स्वस्थ रखते हैं। रुद्राभिषेक और शिव-मंत्रों का जप मानसिक शांति देता है। ध्यान, मौन और जागरण आत्मा को ब्रह्म से जोड़ते हैं। इन विधियों के पीछे गहन तात्त्विक और वैज्ञानिक आधार है, जो आज भी पूरी तरह प्रासंगिक हैं। आज, जब मनुष्य मानसिक तनाव, विकृत जीवनशैली और भौतिक लालसा में अधिक संलिप्तता के विचारों से त्रस्त है, तब सावन और शिवरात्रि जैसे पर्व उसे एक अनूठे जीवन-चिंतन की ओर बुलाता है। यह पर्व बताता है कि हमारी आत्मा का विकास प्रकृति से तालमेल बिठाए बिना नहीं हो सकता। आजकल परमपूज्य श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी पूरे देश में इसी बात का अलख जगाते हुए जनकल्याण समारोहों का आयोजन कर रहे हैं और लोगों को ध्यान सुमिरन के मार्ग पर चलने का उपदेश दे रहे हैं।

इतना ही नहीं, आज जब संसार ऊर्जा संकट, जल-संकट और नैतिकता के क्षरण वाले संकट की ओर बढ़ रहा है, तब सावन की शिवरात्रि हमें युगधर्म की याद दिलाती है। शिव के व्रत, जलाभिषेक, मंत्र-जप की साधना, ध्यान करने का उद्देश्य केवल पूजापाठ नहीं, परिवर्तन लाना है- स्वयं और समाज दोनों में।

स्पष्ट है कि हमें केवल ध्यान साधना में ही नहीं, बल्कि समाज की कठिनाइयों को दूर करने में अपनी सहभागिता निभाने के लिए भी सजग व सचेत रहना होगा। हमें प्राकृतिक और सामाजिक विसंगतियों के हलाहल को रोकने के लिए नीतिगत निर्णयों के साथ अपने व्यक्तिगत आचरण में भी बदलाव लाने होंगे। यही आधुनिक युग में असली सावन की शिवरात्रि होगी कि हम पर्यावरण सुधार के साथ-साथ मानव समाज के आचरण में भी यथोचित बदलाव लाएं।

आइए, इस सावन की शिवरात्रि पर संकल्प लें कि हम जल की एक-एक बूंद का मूल्य समझेंगे। वृक्षारोपण को जीवनशैली का हिस्सा बनाएंगे। व्रत के साथ पर्यावरण रक्षा का भी व्रत लेंगे। शिव को केवल पूजेंगे नहीं बल्कि उनकी शिक्षाओं और आचरणों को अपने जीवन में उतारेंगे। प्रभु नाम के ध्यान-सुमिरन में लगकर तनाव मुक्त रहेंगे। क्योंकि आज के युग में सावन की शिवरात्रि यह संदेश दे रही है कि यदि हमें इस सृष्टि को बचाना है, तो हम शिव की तरह ही सजग बनें, विष का सामना करने की क्षमता विकसित करें, साथ ही जीवन की रक्षा करें। इस वर्ष, सावन की शिवरात्रि पर हम सब शिव की पूजा के साथ उनके तप और त्याग को जीवन में उतारें। यही सनातन धर्म की आत्मा है, और यही है इस पर्व की आधुनिक युग में सबसे बड़ी प्रासंगिकता। ■

कांवड़ यात्रा में 'बम बम भोले' की धूम और सावन में शिव पूजा का महत्व

सावन का महीना हिन्दू धर्म में विशेष आध्यात्मिक महत्व रखता है। यह समय है जब सम्पूर्ण भारत शिवभक्ति के रंग में रंगा नजर आता है। आस्था, समर्पण और उल्लास से परिपूर्ण यह महीना विशेषकर भगवान शिव की पूजा-अर्चना के लिए समर्पित होता है। इस माह में शिवभक्त 'बम बम भोले' के जयघोष के साथ पवित्र तीर्थों से गंगाजल भरकर पैदल यात्रा पर निकलते हैं, जिसे कांवड़ यात्रा कहा जाता है। यह यात्रा केवल एक तीर्थयात्रा नहीं, बल्कि ईश्वर से आत्मिक जुड़ाव का क्रियात्मक गहन अनुभव होता है। कांवड़ यात्रा का आरंभिक उल्लेख हमें पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। कथा के अनुसार, जब समुद्र मंथन हुआ, तो उसमें से निकले विष को भगवान शिव ने लोक कल्याण हेतु पीकर अपने कंठ में धारण कर लिया। इस विष को पीकर उन्होंने योग विधि से उसे अपने कंठ में स्थिर कर लिया, जिससे वे नीलकंठ कहलाए। इस विष की तीव्रता को शांत करने के लिए देवताओं ने गंगाजल से उनका अभिषेक किया। तभी से गंगाजल से शिव का अभिषेक विशेष महत्व रखता है, और यही परंपरा आज कांवड़ यात्रा के रूप में जीवंत है। जब सावन का आगमन होता है, तो पूरा वातावरण **'बम बम भोले'** और **'हर हर महादेव'** के उद्घोष से गुंजायमान हो उठता है। हजारों-लाखों कांवड़िए विभिन्न प्रांतों से निकलकर पवित्र तीर्थों से गंगा जल भरते हैं, और फिर उसी जल को पैदल चलकर अपने क्षेत्र या किसी विशेष शिवधाम में चढ़ाते हैं। मार्ग में ये श्रद्धालु भक्ति गीत गाते, ढोल-नगाड़ों की धुन पर नाचते और जयकारों से वातावरण को भक्तिमय बनाते हैं। भारतवर्ष में कई ऐसे शिवालय हैं,

जहाँ सावन में जल चढ़ाने का विशेष महत्व है। इनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं- बाबा बैद्यनाथ धाम (झारखंड), जहां जल चढ़ाने से भक्तों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं, विशेषकर असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है। बाबा केदारनाथ (उत्तराखंड), यहां गंगाजल से अभिषेक करना अद्भुत पुण्यदायक माना जाता है। हरिद्वार और ऋषिकेश से गंगाजल लेकर गढ़मुक्तेश्वर, उज्जैन, काशी, और बिहार के बासुकीनाथ तक की कांवड़ यात्राएं भी भक्तों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर (वाराणसी) में जल चढ़ाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिए यहाँ भक्तों की भीड़ अत्यधिक होती है। कांवड़ यात्रा केवल उल्लास का पर्व नहीं, यह एक तपस्या है। यात्रियों को चाहिए कि वे संयम, शुद्ध आचरण और आपसी सहयोग का पालन करें। गंगाजल लेकर चलने वाले कांवड़ियों को जल पात्र को ज़मीन पर नहीं रखने की परंपरा है। कुछ भक्त नंगे पांव या सिर पर कांवड़ रखकर पूरी यात्रा करते हैं। यात्रा के दौरान धैर्य, सेवा और अनुशासन का विशेष महत्व होता है। सावन के इस पावन अवसर पर जगह-जगह भजन मंडलियाँ भोले नाथ की भक्ति के भजन गाते हैं और कांवड़ सेवा शिविर भी लगाए जाते हैं, जहाँ शिवभक्तों की सेवा कर लोग पुण्य अर्जित करते हैं। **"बोल बम"** के नारे, **"जय शिव शंकर"** के भजन और **"ओ शिव के भक्तों, गंगा जल लाओ..."** जैसे गीत वातावरण को भक्तिरस में सराबोर कर देते हैं। यह केवल बाहरी क्रिया कलाप ही नहीं होते, बल्कि ये आत्मिक शांति का भी अनुभव कराते हैं। धार्मिक शास्त्रों के अनुसार, सावन में शिव का जलाभिषेक करने से अनंत पुण्य प्राप्त होता है। विशेषकर गंगा जल से शिव को स्नान कराने का फल अत्यंत कल्याणकारी माना गया है। यह जीवन में सुख, समृद्धि, रोगमुक्ति और मानसिक शांति प्रदान करता है। कांवड़ यात्रा, 'बम बम भोले' की गूंज के साथ एक भक्तिपूर्ण यात्रा है जो केवल बाह्य नहीं, आत्मिक परिष्कार की भावना का भी संचार कराने वाली यात्रा है। इसमें भाग लेने वाला प्रत्येक शिवभक्त, चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, अमीर हो या गरीब, एक ही भाव में जुड़ता है- शिव की भक्ति में। सावन में शिव पूजा और कांवड़ यात्रा के माध्यम से समाज में एकता, श्रद्धा और सेवा की भावना का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत होता है। ■

कांवड़ यात्रा पर विशेष

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु पूजा का विधान है। गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है। यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिन भी है। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और उन्होंने चारों वेदों की भी रचना की थी। इस कारण उनका एक नाम वेद व्यास भी है। उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रों में 'गु' का अर्थ बताया गया है- अंधकार या मूल अज्ञान और 'रु' का अर्थ किया गया है- उसका निरोधक। गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि-

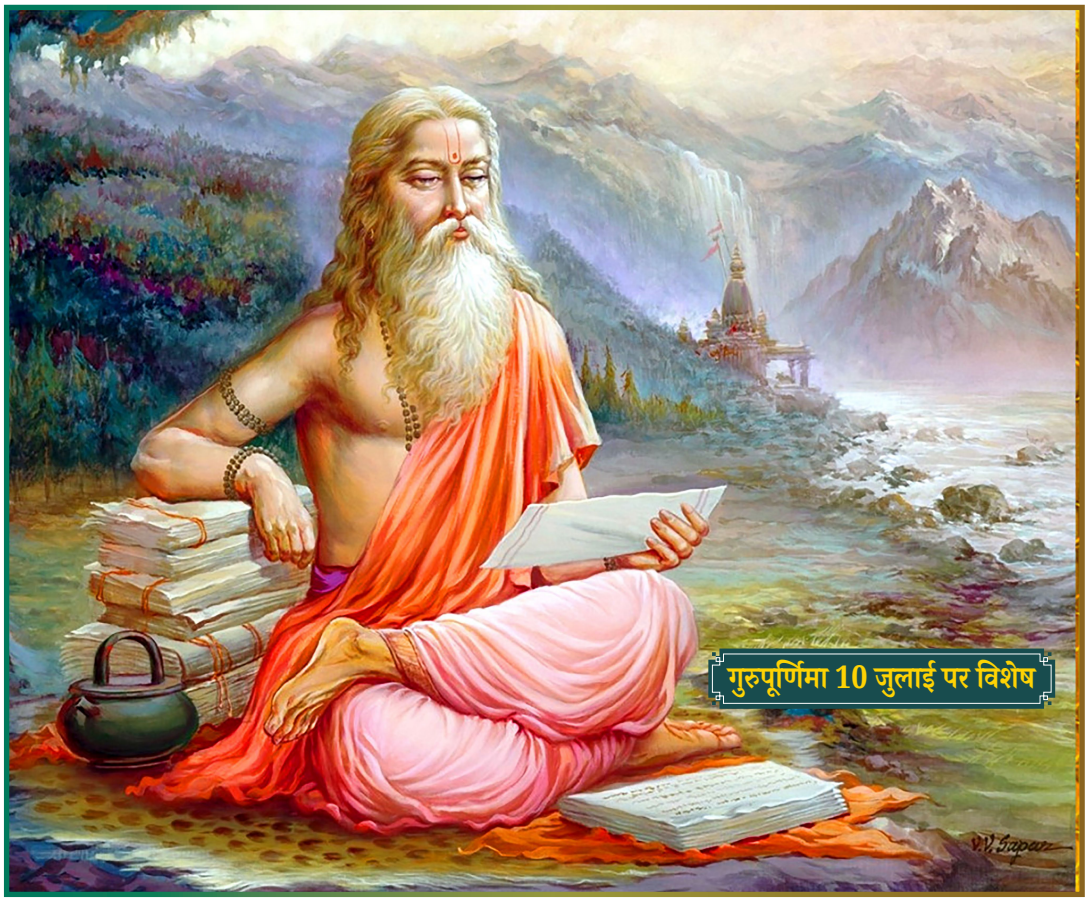

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

वह अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन-शलाका से निवारण कर देता है। अर्थात अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को 'गुरु' कहा जाता है। गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक में कहा गया है कि-

यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।

जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता अर्थात परमात्मा के लिए है, वैसी ही गुरु के लिए भी। सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार संभव है। गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है। भारत भर में गुरु पूर्णिमा का पर्व बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया जाता है। प्राचीन काल में जब विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करता था, तो इसी दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर अपने गुरु का पूजन करके उन्हें अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर कृत-कृत्य होता था। आज भी इसका महत्व कम नहीं हुआ है। पारंपरिक रूप से आज भी यह दिन गुरु को सम्मानित करने का होता है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात, गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं और गुरु ही भगवान शंकर हैं। गुरु ही साक्षात परब्रह्म हैं। ऐसे गुरु को

मैं प्रणाम करता हूं। गुरु के प्रति नतमस्तक होकर कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है गुरुपूर्णिमा। गुरु के लिए पूर्णिमा से बढ़कर और कोई तिथि नहीं हो सकती। जो स्वयं में पूर्ण है, वही तो पूर्णत्व की प्राप्ति दूसरों को करा सकता है। पूर्णिमा के चंद्रमा की भांति जिसके जीवन में केवल प्रकाश है, वही तो अपने शिष्यों के अंत:करण में ज्ञान रूपी चंद्र की किरणें बिखेर सकता है। इस दिन हमें अपने गुरु के चरणों में अपनी समस्त श्रद्धा अर्पित कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए। गुरु कृपा असंभव को संभव बनाती है। गुरु कृपा शिष्य के हृदय में अगाध ज्ञान का संचार करती है।

गुरु को गोविंद से भी ऊंचा कहा गया है। सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है। गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है। **'तमसो मा ज्योतिगर्मय'** अंधकार की बजाय प्रकाश की ओर ले जाना ही गुरुत्व है। व्यास रूपी सद्गुरु शिष्य को परमपिता परमात्मा से साक्षात्कार का माध्यम है। जिससे मिलती है सारूप्य मुक्ति। तभी कहा गया। **''सा विद्या या विमुक्तये।''** आज विश्व स्तर पर जितनी भी समस्याएं दिखाई दे रही हैं, उनका मूल कारण है गुरु-शिष्य परंपरा का टूटना। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। आज गुरु-शिष्य में भक्ति का अभाव गुरु का धर्म 'शिष्य को लूटना, येन केन प्रकारेण धनार्जन है' क्योंकि धर्मभीरुता का लाभ उठाते हुए धनतृष्णा कालनेमि गुरुओं को गुरुता से पतित करता है। यही कारण है कि विद्या का लक्ष्य **'मोक्ष'** न होकर धनार्जन है। ऐसे में श्रद्धा का अभाव स्वाभाविक है। अन्ततः अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचारादि कदाचार बढ़ा। गुरुत्व का उत्थान परमावश्यक है।

गुरु पूजा के दिन प्रात:काल स्नान आदि नित्य-कर्मों से निवृत्त होकर उत्तम और शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु के पास जाना चाहिए। गुरु को ऊंचे सुसज्जित आसन पर बैठाकर पुष्पमाला पहनानी चाहिए। इसके बाद वस्त्र, फल, फूल व माला अर्पण कर तथा धन भेंट करना चाहिए। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक पूजन करने से गुरु का आशीर्वाद प्राप्त होता है। गुरु के आशीर्वाद से ही विद्या आती है। उसके हृदय का अज्ञानता का अन्धकार दूर होता है। गुरु का आशीर्वाद ही प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी, ज्ञानवर्धक और मंगल करने वाला होता है। संसार की संपूर्ण विद्याएं गुरु की कृपा से ही प्राप्त होती हैं और गुरु के आशीर्वाद से ही दी हुई विद्या सिद्ध और सफल होती है। इस पर्व को श्रद्धापूर्वक मनाना चाहिए, अंधविश्वासों के आधार पर नहीं।

आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रूप में मानने का क्या राज है, अगर यह तुम्हें ख्याल में आए, तो आषाढ़ की पूर्णिमा बड़ी अर्थपूर्ण हो जाएगी। बादल घिरे होंगे, आकाश

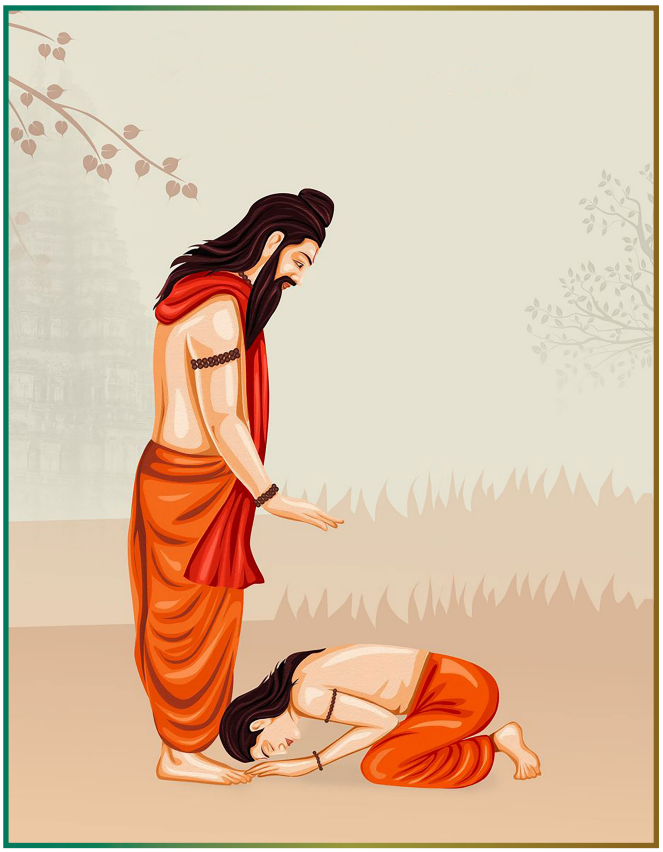

खुला न होगा। और भी प्यारी पूर्णिमाएं हैं, शरद पूर्णिमा है, उसको क्यों नहीं चुन लिया, लेकिन चुनने वालों का कोई ख्याल है, कोई इशारा है। वह यह है कि गुरु तो है पूर्णिमा जैसा और शिष्य है आषाढ़ जैसा। शरद पूर्णिमा का चांद तो सुंदर होता है, क्योंकि आकाश खाली है। वहां शिष्य है ही नहीं, गुरु अकेला है। आषाढ़ में सुंदर हो, तभी कुछ बात है, जहां गुरु बादलों जैसा घिरा हो शिष्यों से। शिष्य सब तरह के हैं, जन्मों-जन्मों के अंधेरे को लेकर आए हैं। वे अंधेरे बादल हैं, आषाढ़ का मौसम है। उसमें भी गुरु चांद की तरह चमक सके, उस अंधेरे से घिरे वातावरण में भी रोशनी पैदा कर सके, तो ही गुरु है। इसलिए आषाढ़ की पूर्णिमा! वह गुरु की तरफ भी इशारा है और उसमें शिष्य की तरफ भी इशारा है। और स्वभावत: दोनों का मिलन जहां हो, वहीं सार्थकता है। गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर श्री सद्गुरु चरणकमलों में बार बार नमन! ■

जीवन में सकारात्मक ऊर्जा- संचार करने वाला पर्व है हरियाली तीज

श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाने वाली हरियाली तीज हिन्दू संस्कृति में नारी शक्ति, सौंदर्य, श्रद्धा और दांपत्य प्रेम का प्रतीक पर्व है। यह पर्व विशेष रूप से विवाहित स्त्रियों द्वारा अपने पति की दीर्घायु, सुखमय वैवाहिक जीवन और पारिवारिक समृद्धि की कामना से किया जाता है। यह पर्व न केवल धार्मिक आस्था से जुड़ा है, बल्कि आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका विशेष महत्व है; क्योंकि यह स्त्री मन को सकारात्मक आत्मिक शक्ति, सामाजिक जुड़ाव और उत्सव की उमंग से भर देता है। हरियाली तीज के उत्सव का सम्बन्ध भगवान शिव और माता पार्वती से है। शास्त्रों के अनुसार, माता पार्वती ने 108 जन्मों तक कठोर तप कर शिव को पति रूप में प्राप्त किया था। तीज का व्रत उनके उसी समर्पण, प्रेम और धैर्य की स्मृति में मनाया जाता है। कहते हैं कि इसी दिन भगवान शिव ने देवी पार्वती को पत्नी रूप में स्वीकार किया था। इसलिए यह दिन वैवाहिक सुख-सौभाग्य की कामना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

हरियाली तीज के दिन प्रात: स्नान कर शिव-पार्वती की मूर्ति को पालने में झुलाती हैं और पूजा करती हैं और स्वयं भी झूला झूलती हैं। इस दिन व्रती स्त्रियों को झूठ बोलने, कटु वचन कहने, झगड़ा करने और दिन में सोने से बचना चाहिए। साथ ही तामसिक भोजन से भी परहेज़ करना आवश्यक होता है। हरियाली तीज का पर्व विशेष रूप से उत्तर भारत, विशेषकर राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। स्त्रियाँ पारंपरिक गीत गाती हैं, हरे वस्त्र पहनती हैं, हाथों में मेंहदी रचाती हैं और झूले झूलती हैं। यह हरा रंग प्रकृति की समृद्धि, जीवन की तरलता और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इस व्रत का बहुत लाभ मिलता है। आज के दौर में जब दांपत्य जीवन में तनाव, भागदौड़ और संप्रेषण की कमी बढ़ रही है, हरियाली तीज जैसे पर्व एक अवसर प्रदान करते हैं- संबंधों को नवजीवन देने का। यह व्रत नारी को आत्मिक रूप से सशक्त बनाता है। यह उसका मानसिक आत्मबल, अनुशासन और प्रेम में स्थिरता को बढ़ाता है। साथ ही जब परिवार मिलकर इस पर्व को मनाता है, तो दांपत्य जीवन में सामंजस्य, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव भी गहराता है। हरियाली तीज केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं, बल्कि नारी की चेतना, सृजनशक्ति और दांपत्य प्रेम का जीवंत उत्सव है। यह पर्व हमें सिखाता है कि प्रेम, समर्पण और श्रद्धा से वैवाहिक जीवन में स्थायित्व व सुख-शांति बनी रहती है। शास्त्रों में कहा गया है- "पति स्त्री के जीवन का अर्धांग है, और स्त्री उसके सौभाग्य की रक्षा का व्रत है।" हरियाली तीज उसी भावनात्मक संतुलन और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने वाला अनुपम अवसर है। ■

प्रेरक प्रसंग

गुरु का नौकर

पुराने समय में एक राज्य में अकाल पड़ गया। वहां के राजा को बहुत नुकसान हुआ, उसे प्रजा से लगान नहीं मिल पाया। राज्य चलाने के लिए राजा के धन भी नहीं बचा था। राजा को ये भी चिंता थी कि पड़ोसी राजा हमला न कर दे। राजा ने एक बार अपने कुछ मंत्रियों को उसके खिलाफ षडयंत्र रचते भी पकड़ लिया था। इन सारी परेशानियों की वजह से राजा रातभर जागते रहता था, उसकी नींद उड़ गई थी। राजा को कई पकवान परोसे जाते, लेकिन वह खा नहीं पाता था, उसे भूख नहीं लगती थी। उस राजा के शाही बाग में एक माली था। राजा रोज उसे देखता था, वह प्याज और चटनी के साथ रोटियां खाता था और हमेशा खुश रहता था। राजा ने ये बातें अपने गुरु को बताईं तो गुरु ने कहा कि अगर आपको चौकीदार की नौकरी ज्यादा अच्छी लगती है, तो ये राज्य मुझे दे दो और आप मेरे यहां नौकरी कर लो। मैं तो ठहरा साधु, मैं आश्रम में ही रहूंगा, लेकिन इस राज्य को चलाने के लिए मुझे एक नौकर चाहिए। आप पहले की तरह ही महल में रहें। राज सिंहासन पर बैठें और राज्य चलाएं, यही आपकी नौकरी होगी।

राजा ये बातें सुनकर खुश हुआ और उसने गुरु की बात मान ली। अब वह अपने काम को नौकरी की तरह करने लगा। फर्क कुछ भी नहीं था, काम वही था, लेकिन अब राजा जिम्मेदारियों और चिंता से लदा हुआ नहीं था। कुछ महीनों बाद उसके गुरु आए। उन्होंने राजा से पूछा कि अब आपको भूख लगती है और नींद आती है या नहीं? राजा ने कहा कि मालिक अब खूब भूख लगती है और आराम से सोता हूं। गुरु ने राजा को समझाया कि सबकुछ पहले जैसा ही है, लेकिन पहले तुमने जिस काम को बोझ समझ रखा था। अब सिर्फ उसे अपना कर्त्तव्य समझ कर रहे हो। हमें ये जीवन कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए मिला है। किसी चीज को अपने ऊपर बोझ की तरह लादने के लिए नहीं मिला है। काम कोई भी हो, चिंता उसे और ज्यादा कठिन बना देती है। जो भी काम करें, उसे अपना कर्त्तव्य समझकर ही करें। इन बातों का ध्यान रखने पर ही हमारे जीवन में सुख-शांति बनी रहती है। इस प्रसंग का अभिप्राय यही है कि सद्गुरु की शरण लेकर निमित्त मात्र बनकर कर्त्तव्य कर्म करने में ही सच्ची सुख-शांति सन्निहित है। ■

जुलाई, 2025 के पर्व-त्योहार

 6 जुलाई रविवार- देवशयनी एकादशी 10 जुलाई गुरुवार- गुरुपूर्णिमा 14 जुलाई सोमवार- सावन का पहला सोमवार 23 जुलाई बुधवार- मासिक शिवरात्रि 27 जुलाई रविवार- श्री भोले जी महाराज जन्मदिवस एवं हरियाली तीज 29 जुलाई मंगलवार- नागपंचमी

नमो नमो गुरु तुम सरना।

नमो नमो गुरु तुम सरना।
तुम्हारे ध्यान भरम भय भागै, जीते पांचै और मना।। टेक।।
दुःख दारिद्र मिटै तुम नाऊँ, कर्म कटै जो होहिं घना।
लोक परलोक सकल बिधि सुधरै, पग लागै आय ज्ञान गुना।।
नमो नमो गुरु तुम सरना।। 1।।
चरण छुए सब गति मति पलटे, पारस जैसे लोह सुना।
सीप परसि स्वाति भयो मोती, सोहत है सिर राज रना।।
नमो नमो गुरु तुम सरना।। 2।।
ब्रह्म होय जीव बुधि नासे, जब कैसे होना मरना।
अमर होय अमरपद पावे, यह मुर कहिए गुरु बचना।।
नमो नमो गुरु तुम सरना।। 3।।
चरणदास गुरु पूरे पाये, जग का दुःख सुख क्यों सहना।
सहजो बाई ब्याध छुटाकर, आनंद मंगल में रहना।।
नमो नमो गुरु तुम सरना।। 4।।

अंतर्राष्ट्रीय योग उत्सव-2025 के अवसर पर माताश्री मंगला जी ''गंगा अवार्ड'' से सम्मानित

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में योग, ध्यान और आत्मिक जागरूकता का संदेश देने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग उत्सव-2025 संपन्न हुआ। इस अवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं करुणामयी माताश्री मंगला जी को उनके उत्कृष्ट कार्यों से समाज में आ रहे सकारात्मक बदलाव के लिए **''गंगा अवार्ड''** से सम्मानित किया गया। उत्सव में उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह, स्वामी चिदानंद सरस्वती, साध्वी भगवती सरस्वती, कैबिनेट मंत्री श्री धन सिंह रावत, प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर तथा अनेक अंतर्राष्ट्रीय योगगुरु एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। योगाचार्यों के मार्गदर्शन में युवकों ने विभिन्न योग आसनों का अद्भुत प्रदर्शन किया। माताश्री मंगला जी ने अपने संदेश में कहा कि योग मात्र शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि मन और आत्मा से जुड़ने का माध्यम है। इस दौरान कैलाश खेर ने अपने गीतों से पूरे वातावरण को संगीतमय बना दिया। गंगा आरती, विश्व शांति एवं सद्भावना की दिव्य भावना के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अभिव्यक्ति-2025 समारोह में मुख्य अतिथि रहीं माताश्री मंगला जी

बी.एस. नेगी महिला तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून में आयोजित **"अभिव्यक्ति-2025"** परिधान एवं वेशभूषा अभिकल्प कार्यशाला में करुणामयी माताश्री मंगला जी की मुख्य अतिथि के रूप में गरिमामयी उपस्थिति हुई। द हंस फाउंडेशन की प्रेरणास्रोत माताश्री मंगला जी के आशीर्वाद एवं सहयोग से उत्तराखंड के दूरस्थ गांवों से आने वाली जरूरतमंद परिवारों की ये छात्राएं सशक्त होकर अपने भविष्य को निखार रही हैं और अपने सपनों को साकार करने की ओर अग्रसर हैं। समारोह के उद्घाटन के पश्चात माताश्री मंगला जी ने छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा की सराहना की। उन्होंने कहा कि छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए संस्थान के प्रधानाचार्या एवं प्राध्यापिकाओं का निरंतर अथक परिश्रम और समर्पण सराहनीय है, जो कि इस सफल यात्रा के आधार स्तंभ हैं। इनके प्रयास से छात्राओं को भविष्य में आत्मनिर्भर होने की नई दिशा मिल रही है। संस्थान में पहुंचने पर प्रधानाचार्या, प्राध्यापिकाओं एवं छात्राओं ने माताश्री मंगला जी का भव्य स्वागत किया।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्म-दिवस पर

विशाल जनकल्याण समारोह 26 व 27 जुलाई, 2025 को

सभी भगवद्भक्तों को यह जानकर अपार हर्ष होगा कि **दिनांक 26 एवं 27 जुलाई, 2025** (शनिवार एवं रविवार) को **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज** का पावन जन्म-दिवस श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइन्स रोड, भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस सुअवसर पर 26 व 27 जुलाई को **विशाल जनकल्याण समारोह** सायं 6 से 9 बजे तक आयोजित किया जायेगा जिसमें **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी** के अध्यात्म-ज्ञान तथा जनकल्याण पर सारगर्भित प्रवचनों के साथ महात्मा/बाईगण का भी सत्संग होगा और प्रसिद्ध गायकों द्वारा भजन-गायन होगा। इस अवसर पर आत्म-जिज्ञासुओं को अध्यात्म-ज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अत: आप सब अपने इष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारकर पावन जन्मोत्सव एवं जनकल्याण समारोह से आनन्द व आत्म-लाभ प्राप्त करें।

-:कार्यक्रम:-

26 जुलाई, 2025 (शनिवार) सायं 6 से 9 बजे सत्संग-प्रवचन-भजन

27 जुलाई, 2025 (रविवार) सुबह 10 बजे से पूजन एवं दर्शन

सायं 6 से 9 बजे सत्संग-प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइन्स रोड,
भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- **हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर),** नई दिल्ली
संपर्क-8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।

www.youtube.com/@hanslokTV
https://www.facebook.com/Hanslok

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्म-दिवस के सुअवसर पर 26 व 27 जुलाई, 2025 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी माइन्स रोड, भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली में विशाल जनकल्याण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर **श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं का 25 से 28 जुलाई, 2025 तक "सेवा शिविर" लगाया जा रहा है** जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 25 जुलाई, 2025 को अपराह्न 3 बजे से श्री हंसलोक सेवकों का **'मार्गदर्शन शिविर'** रखा गया है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अत: सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 24 जुलाई की शाम तक अथवा 25 जुलाई, 2025 की प्रात: 8 बजे तक श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली अवश्य पहुँच जायें और सौंपी गयी सेवा को संभाल लें। हमें आप सबका भरपूर सहयोग अपेक्षित है।

निवेदक
श्री हंसलोक सेवक संगठन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025, ऋषिकेश, उत्तराखंड

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में योग, ध्यान और आत्मिक जागरूकता का संदेश देने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर, पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं करुणामयी माता श्री मंगला जी को उनके उत्कृष्ट कार्यों से समाज में आ रहे सकारात्मक बदलाव के लिए गंगा अवार्ड से सम्मानित किया गया।** समारोह में उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह जी, साध्वी भगवती सरस्वती जी, कैबिनेट मंत्री श्री धन सिंह रावत जी, प्रसिद्ध गायक पद्मश्री कैलाश खेर सहित अनेक योगगुरु एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।कार्यक्रम के दौरान कैलाश खेर ने अपने भजन और गीतों की प्रस्तुति से पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। गंगा आरती के दिव्य आयोजन के साथ विश्व शांति एवं सद्भावना के लिए प्रार्थना की गई। माता श्री मंगला जी ने अपने संदेश में कहा कि योग मात्र शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और परमात्मा से जुड़ने का माध्यम है।

गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं

गुरु का महत्व सिर्फ एक मार्गदर्शक का नहीं, बल्कि एक उत्प्रेरक का होता है। गुरु, व्यक्ति को अपने भीतर के सत्य को जानने, अनुभव करने और जीने में मदद करता है। वह शिष्य को केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि उसे एक नई चेतना और जीवन शैली के लिए प्रेरित करता है। वह शिष्य को अपने जीवन को अधिक आनंदमय, सहज और सत्य के साथ जीने में मदद करता है। गुरु शिष्य के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। वह शिष्य को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है और उसे जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर नई चेतना और जीवन शैली के लिए प्रेरित करता है। **- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी**

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।